04 - ठिकाने लगाने की कला

05 - अनहद विचारों की सारथी भारतीय कला

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 20 जुलाई, 2025

06 - मां नर्मदा के पूजन से धुआंधार कावड़ यात्रा की शुरुआत हुई

07 - बदले क्लाइमैक्स के साथ 'शोले' फिर परदे...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 311, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सावन में कैलास की महिमा

फोटो: पंकज शर्मा

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

जब नदी हो तुम,
तुम्हारा है किनारा भी
फूल दो तुम
हाथ महकेगा तुम्हारा भी
शाम सुबहें हैं तुम्हीं से
रात दिन भी हैं
हम तुम्हारे ऋणी होकर ही
उऋण भी हैं
चांद तुमसे,
है तुम्हीं से हर सितारा भी
होंठ हैं ख़ामोश
फिर भी बात करते हैं
हैं भले पल,
उम्र भर का साथ करते हैं
एक सपना पहनकर सब कुछ
उघारा भी
हम कि सोते जागते
बस गीत रचते हैं
हम तुम्हारी याद से भी
कहां बचते हैं?
तुम्हीं ने उलझा दिया है
फिर संवारा भी
हम कि हैं सूरजमुखी
पहचान तुमसे है
जो कि हममें दिख रहा
अभिमान तुमसे है
डुबो तुमने ही दिया,
तुमने उबारा भी
कह रहा दामन
कि दामनगीर तुमसे है
ज़िंदगी की मुकम्मल
तस्वीर तुमसे है
चित्र को धुंधला किया है
फिर उभारा भी।

– यश मालवीय

महिलाओं के 'विकास' से ही होगा देश का विकास

● संघ चीफ बोले-महिला सशक्तिकरण किसी भी राष्ट्र के विकास की नींव

आरएसएस प्रमुख बोले-इन्हें पिछड़ी परंपराओं से मुक्त किया जाना चाहिए

पुणे (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि महिलाओं को पिछड़ी परंपराओं और रूढ़ियों से मुक्त करना बेहद जरूरी है। महाराष्ट्र के सोलापुर में 'उद्योगवर्धिनी' संस्था के आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा- महिलाओं का सशक्तिकरण किसी भी राष्ट्र के विकास की नींव है। उन्होंने कहा कि पुरुष और महिला दोनों जीवनभर काम करते हैं, लेकिन महिला काम के साथ भावी पीढ़ियों को भी प्रेरित करती है। बच्चों के विकास में उनका स्नेह और मार्गदर्शन अहम भूमिका निभाता है। भागवत ने पुरुषों की उस सोच को गलत बताया, जिसमें वे खुद को महिलाओं का उत्थान करने वाला मानते हैं। उन्होंने कहा- पुरुषों को यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि वे महिलाओं का उत्थान करेंगे। ईश्वर ने महिलाओं को न केवल पुरुषों जैसी क्षमताएं दी हैं, बल्कि अतिरिक्त गुण भी दिए हैं जो उन्हें खास बनाते हैं। 2 अक्टूबर को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 साल पूरे हो रहे हैं। 2 अक्टूबर गांधी जयंती के दिन विजया दशमी भी है। विजया दशमी के दिन संघ की स्थापना हुई थी। संघ ने 2 अक्टूबर को अपने नए-पुराने स्वयं सेवकों को शाखाओं में पहुंचने का आह्वान किया है। एक ओर रामधुन बजेगी, वहीं जिन शाखाओं में 100 से अधिक स्वयं सेवक हैं, वहां पथ संचलन होगा। 4-6 जुलाई तक दिल्ली में संघ की अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक में अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों पर चर्चा की थी। घर-घर संपर्क अभियान संघ के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने बताया कि शताब्दी वर्ष में यूपी में संघ भीड़ जुटाने का कोई बड़ा कार्यक्रम आयोजित नहीं करेगा। आम लोगों से जुड़ने के लिए ग्राम पंचायत, न्याय पंचायत, ब्लॉक स्तर पर शाखाएं कार्यक्रम करेंगी। जिलों में चुनिंदा 100 से 200 लोगों की गोष्ठियां होगी। छोटी गोष्ठियां शाखा स्तर पर भी होंगी। ग्रामीण में मंडल व शहरी क्षेत्रों में बस्ती स्तर पर हिन्दू सम्मेलन होंगे। संघ 'गृह संपर्क' का अब तक का सबसे बड़ा अभियान चलाएगा।

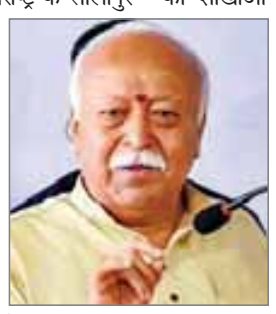

मानसून सत्र के लिए रणनीति तैयार कर रही है मोदी सरकार

● राजनाथ सिंह के घर मंत्रिसमूह की बैठक ,कई मुद्दों पर चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के निवास पर गुरुवार को संसद के मानसून सत्र की शुरुआत से पहले एक रणनीति बैठक आयोजित की गई। इसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, अमित शाह, जेपी नड्डा और किरेन रिजीजू समेत प्रमुख केंद्रीय मंत्री शामिल हुए। मानसून सत्र 21 जुलाई से शुरू हो रहा है जिसमें विपक्ष के बिहार में मतदाता सूची का विशेष गहन संशोधन और ऑपरेशन सिंदूर को लेकर हंगामा करने की प्रबल आशंका है। रविवार को होने वाली पारंपरिक सभी दलों की बैठक के मद्देनजर, मंत्रियों के समूह ने विपक्ष द्वारा उठाए जा रहे मुद्दों, जैसे बिहार में मतदाता सूची का विशेष गहन संशोधन, पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर पर सरकार के रुख को लेकर रणनीति बनाई है। बैठक के एजेंडे पर कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की गई, लेकिन यह सत्र से संबंधित ही था।

प्रवासी भारतीयों के साथ मध्यप्रदेश का है मजबूत जुड़ाव : मुख्यमंत्री

सरकार निभा रही हर निवेश संकल्प, टूरिज्म और मेडिकल सेक्टर में मिल रहा बड़ा प्रोत्साहन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश अब केवल संभावना नहीं, बल्कि निवेश का सशक्त मंच बन चुका है। राज्य सरकार ने नीति, प्रक्रिया और प्रोत्साहन के तीनों स्तरों पर गंभीर और प्रभावी सुधार किए हैं, जिससे निवेशकों को वास्तविक लाभ और विश्वास दोनों मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अब विकास और निवेश साथ-साथ चल रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विदेश में बसे भारतीय केवल नागरिक ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के संवाहक भी हैं। उन्होंने कहा कि बार्सिलोना में भारतीयों का जो अपनापन दिखा, वह उन्हें उज्जैन की अनुभूति कराता है। भारतीय जहां भी जाते हैं, वहां परंपरा और पर्वों की गरिमा बढ़ाते हैं। उन्होंने कहा कि यह केवल एक संवाद नहीं, बल्कि हृदय से हृदय का जुड़ाव है। सरकार निवेश को केवल आर्थिक लेन-देन नहीं मानती, बल्कि उसे भावनात्मक और दीर्घकालिक भागीदारी का माध्यम मानती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बार्सिलोना में शुक्रवार को प्रवासी भारतीयों और फ्रेंड्स ऑफ एमपी के बीच आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में बढ़ी भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की वैश्विक साख अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। भारत एक मात्र ऐसा देश है जो 80 करोड़ भारतीयों को मुफ्त राशन उपलब्ध करा रहा है। यह भारत की क्षमताओं और व्यवस्था की शक्ति का परिचायक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि बार्सिलोना में आप सभी का उत्साह देखकर लग रहा है कि मैं उज्जैन में हूं। काउंसल जनरल श्री इनबासेकर सुंदरमूर्ति के प्रभावशाली भाषण ने दिखा दिया है कि स्पेन के प्रवासी भारतीय आज भी अपनी मिट्टी से जुड़े हुए हैं। ईश्वर ने भारतीयों को यश दिया है कि जहां चाहें उसे ही स्वर्ग बना देते हैं। महाकाल की नगरी उज्जैन का गौरवशाली इतिहास रहा है। भारतीयों को देखकर लोग होली-दिवाली मना लेते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतवंशियों की प्रतिष्ठा बढ़ी है। भारतीय, दूध में शक्कर की तरह घुल-मिल जाते हैं। ये देश है वीर जवानों का... भारतीय संस्कृति को दिखाता है। भारत वीरों का देश है। वर्तमान समय में भारत ने दुनिया में अपनी साख बनाई है। भारत की प्रगति देखकर दुनिया दांतो तले ऊंगलियां दबा लेती है।

नीतियों में पारदर्शिता और प्रक्रिया में गति- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में निवेश से जुड़ी सभी नीतियां निवेशकों की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। प्रक्रियाओं को डिजिटलीकरण और फास्ट ट्रैक स्वीकृति व्यवस्था से जोड़ा गया है। लंदन में एक उद्योगपति को ऑनलाइन आवेदन के तुरंत बाद भूमि आवंटन किया जाना इसी का उदाहरण है।

होटल प्रोजेक्ट पर 30 करोड़ रु. तक की सब्सिडी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि टूरिज्म सेक्टर को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से होटल परियोजनाओं पर सरकार 30 करोड़ रुपये तक की वित्तीय सहायता दे रही है। यह सहायता 100 करोड़ रुपये तक की लागत वाली परियोजनाओं के लिए लागू है, जिससे प्रदेश में विश्वस्तरीय पर्यटन सुविधाएं विकसित हो सकें।

ठाकरे ब्रांड नहीं, महाराष्ट्र-हिंदू अस्मिता की पहचान

उद्धव बोले-शिंदे गुट इसकी चोरी कर रहा, चुनाव आयोग पत्थर है

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने कहा- 'ठाकरे' एक ब्रांड नहीं महाराष्ट्र, मराठी मानुष और हिंदू अस्मिता की पहचान है। ठाकरे का मतलब ही संघर्ष है। कोई यह नाम, लोगों का प्यार या विश्वास नहीं चुरा सकता। कुछ लोग इस पहचान को मिटाने की कोशिश की, लेकिन खुद ही मिट गए। उद्धव ने ये बातें पार्टी के मुखपत्र 'सामना' को दिए इंटरव्यू में कहीं। शिंदे गुट पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा- जिनके पास कुछ नहीं है और जो अंदर से खोखले हैं, उन्हें ठाकरे ब्रांड की मदद लगती है। यही इस ब्रांड की खासियत है। उन्होंने आरोप लगाया कि शिंदे गुट इस ब्रांड की चोरी कर रहा है और खुद को इसका भक्त बताकरमहत्व बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। उद्धव ने कहा कि चुनाव आयोग एक पत्थर है। उस पत्थर पर सिंदूर लगा देने से उसे 'शिवसेना' नाम और धनुष-बाण देने का अधिकार नहीं मिल जाता।

समुद्र में 'संकट मोचक' बनेगा आईएनएस निस्तार !

● भारतीय नौसेना को मिल गया एक और नया जहाज ● विशाखापत्तनम में तैनात ,इंडियन नेवी की बढ़ी ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना को शुक्रवार को विशाखापत्तनम में एक नया जहाज मिला है। इस जहाज का नाम आईएनएस निस्तार है। यह एक खास तरह का जहाज है जो गहरे समुद्र में गोता लगाने और पनडुब्बियों को बचाने में मदद करेगा। इसे हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड ने बनाया है। इससे हिंद महासागर में भारतीय नौसेना की ताकत और बढ़ जाएगी। नौसेना ने ऐसे दो जहाज बनाने का ऑर्डर 2018 में दिया था। आईएनएस निस्तार उनमें से पहला है। इसका दूसरा जहाज निपुण 2022 में लॉन्च हुआ था। सबसे बड़ी बात यह है कि आईएनएस निस्तार भारत में ही बना है और यह 'आत्मनिर्भर भारत' का एक अच्छा उदाहरण है। आईएनएस निस्तार भारत की तरक्की की कहानी कहता है। इससे पता चलता है कि भारत अब अपने जहाजों को खुद बनाने में कितना आगे बढ़ गया है। यह देश की सुरक्षा के लिए भी बहुत जरूरी है। पहले आईएनएस निस्तार नाम का एक जहाज सोवियत संघ से खरीदा गया था। वह 1971 में नौसेना में शामिल हुआ था और 1989 तक काम करता रहा। उसने कई बचाव कार्यों में मदद की थी। नया निस्तार कई खासियतों के साथ अब बिल्कुल अलग है। भारतीय नौसेना ने 2018 और 2019 में ब्रिटेन की कंपनी जेम्स फिशर एंड संस से दो आईएनएस खरीदे थे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 20 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

टीआरएफ पर बैन लगते ही बौखलाया पाकिस्तान

- लश्कर खत्म हो चुका, आतंकी जेल में, मुश्किल में शहबाज

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में कई बार आतंकी हाफिज सईद को सार्वजनिक तौर पर देखा गया है। वहीं बिलावल भुट्टो तो हाफिज सईद और मसूद अजहर जैसे आतंकियों को भारत को सौंपने तक की बात कह चुके हैं। ये दिखाता है कि पाकिस्तान में आतंक को पनाह मिलती है। इस बीच पाकिस्तान ने कहा है कि उसने लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े आतंकी

नेटवर्क को खत्म कर दिया है। अब उसकी जमीन पर कोई टेरर कैंप नहीं चल रहा है। पाकिस्तान की ओर से ये भी दोहराया गया है कि पहलगाम में हमले को अंजाम देने वाले आतंकियों का उसकी जमीन से कनेक्शन नहीं है। पाक की ओर ये यह बयान ऐसे समय आया है, जब अमेरिका ने द रजिस्टेंस फ्रंट को आतंकी संगठन घोषित किया है। टीआरएफ लश्कर का ही हिस्सा है। इसी गुट पर पहलगाम आतंकी हमले का आरोप है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने अपने बया में कहा कि उसने लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े आतंकवादी नेटवर्क को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया है।

ओडिशा में नाबालिग लड़की को पेट्रोल डालकर जिंदा जलाया

- हालत गंभीर, थाने से डेढ़ किलोमीटर दूर की घटना, तीनों आरोपी फरार

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के पुरी में शनिवार को 15 साल की नाबालिग लड़की को तीन लोगों ने पेट्रोल डालकर आग लगा दी। लड़की को गंभीर हालत में एम्स भुवनेश्वर में भर्ती कराया गया है। उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। घटना पुरी जिले के बायाबर गांव में उस वक्त हुई जब पीड़ित लड़की अपने दोस्त के घर

जा रही थी। तीन हमलावरों ने उसे रास्ते में रोका और पेट्रोल डालकर आग लगा दी। घटना स्थल बालंगा थाने से डेढ़ किलोमीटर दूर घटी। तीनों आरोपी फरार हैं, पुलिस ने सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। छात्रा को आग क्यों लगाई, अभी तक इसकी कोई वजह सामने नहीं आई है। इससे पहले, 12 जुलाई को ओडिशा के बालासोर के फकीर मोहन कॉलेज में छात्रा के साथ सेक्शुअल हैरेसमेंट का मामला सामने आया था। छात्रा ने इससे तंग आकर खुद पर केरोसिन छिड़क लिया था और प्रिंसिपल ऑफिस के बाहर खुद को आग लगा ली थी। 14 जुलाई को इलाज के दौरान छात्रा की मौत हो गई थी।

नव संकल्प शिविर

उमंग सिंघार

(मध्यप्रदेश विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष)

राजनीतिक जंग के लिए तैयार होगा कांग्रेस का हर विधायक

इस बार मध्यप्रदेश विधानसभा का मानसून सत्र कुछ अलग होगा। क्योंकि, कांग्रेस अपने विधायकों को इस बार विधानसभा में सरकार से मुकाबले के लिए अलग तरीके से तैयार कर रही है। इसके लिए एक विशेष शिविर का आयोजन किया जा रहा है, ताकि वे हर मुद्दे पर और ज्यादा मजबूती से सरकार की घेराबंदी कर सकें। धार जिले के मांडू में दो दिन (21 और 22 जुलाई) को राजनीति के जानकार और पार्टी के वरिष्ठ नेता विधायकों के साथ चिंतन करेंगे और अपने अनुभव साझा करेंगे। इस शिविर को 'नव संकल्प शिविर' नाम दिया गया है। इस शिविर को वर्चुअली श्री राहुल गांधी और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुन खरगे भी संबोधित कर विधायकों को पार्टी की विचारधारा से अवगत कराएंगे।

दो दिन के शिविर में कुल 12 सत्र होंगे, जिनमें अलग-अलग विषय विशेषज्ञ विधायकों को उद्बोधन देंगे। कांग्रेस के विधायकों को कांग्रेस पार्टी के इतिहास, विचारधारा के अलावा आजादी के आंदोलन में पार्टी के योगदान से भी अवगत कराया जाएगा। विधायकों को आजादी के बाद की चुनौतियों से कांग्रेस किस तरह से जूझी, इस बात की भी जानकारी दी जाएगी। इसका मकसद यह है कि कांग्रेस के विधायकों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि उनकी पार्टी का इतिहास आजादी से पहले का है और आजादी के बाद देश के निर्माण में भी कांग्रेस की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। शिविर के दौरान विधायकों को इस बात की भी जानकारी दी जाएगी कि फ़िलहाल संगठन की स्थिति क्या है और भविष्य में पार्टी संगठन का किस तरह से विस्तार किया जाना है।

विधायकों को यह भी बताया जाएगा कि फ़िलहाल पार्टी के सामने क्या और कैसी राजनीतिक चुनौतियां हैं और कांग्रेस के विधायकों के साथ पार्टी कार्यकर्ताओं की भूमिका क्या होना चाहिए। साथ ही राहुल गांधी जी के सामाजिक न्याय और जातिगत जनगणना अभियान और उसकी राजनीतिक और सामाजिक जरूरत से भी विधायकों को अवगत कराया जाएगा। बताया जाएगा कि सामाजिक न्याय की अवधारणा पर राहुल गांधी ने जातिगत जनगणना को लेकर जो अभियान चलाया, उस पर केंद्र सरकार को किस तरह झुकना पड़ा। जातिगत जनगणना अभियान की विस्तृत जानकारी देने की जरूरत इसलिए भी महसूस की गई कि सत्ताधारी भाजपा इसे अपना निर्णय बताकर कांग्रेस की मांग के आगे झुकने से बचना चाह रही है।

इस शिविर में भाग लेने वाला हर विधायक चुनाव जीतकर आया है। फिर भी उन्हें 2028 के मिशन के तहत चुनाव प्रबंधन की जानकारी

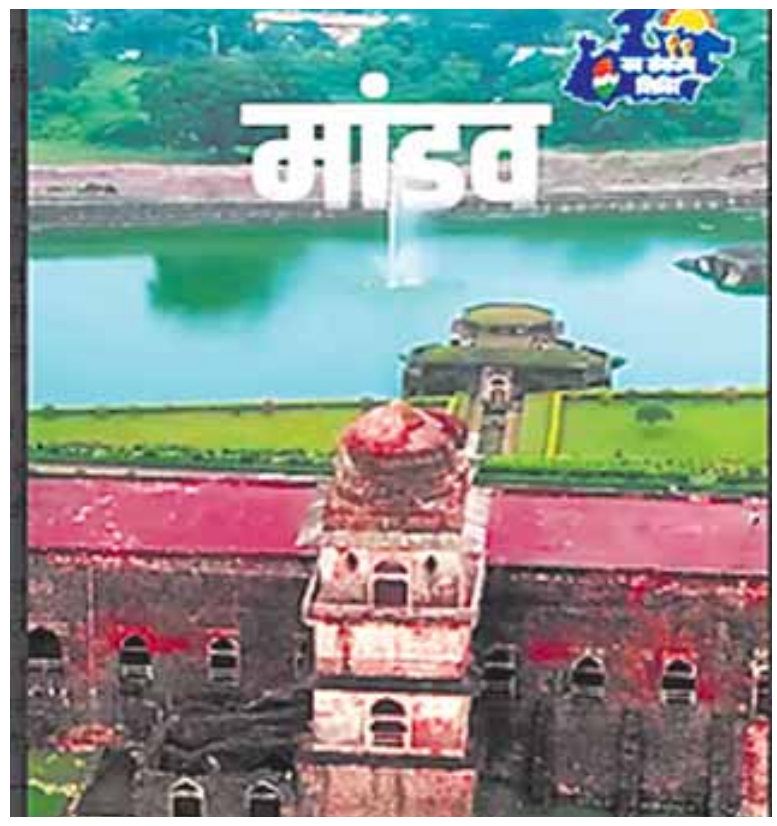

भी दी जाएगी। हर राजनीतिक पार्टी के लिए मीडिया का मूड महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अब सोशल मीडिया की चुनाव में अहम भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। इस सत्र में विधायकों को बताया जाएगा कि सोशल मीडिया की छोटी-छोटी जानकारियां को किस तरह हथियार बनाकर प्रतिद्वंदी के साथ मुकाबला किया जा सकता है। शिविर में प्रदेश की भाजपा सरकार की विफल नीतियों और घपलों-घोटालों को जनता के सामने लाने और विधानसभा में उसे हथियार बनाकर सरकार को घेरने पर भी मंथन होगा।

कांग्रेस विधायकों के इस प्रशिक्षण सत्र को कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी के अलावा प्रदेश प्रभारी श्री हरीश चौधरी, प्रेरक वक्ता श्री सोनू शर्मा, पूर्व प्रमुख सचिव मध्यप्रदेश विधानसभा श्री भगवदेव इसरानी, पूर्व मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ जी, राज्यसभा सांसद श्री विवेक तन्खा, अध्यक्ष एआईसीसी मीडिया विभाग श्री पवन खेड़ा, राज्यसभा सांसद श्री अजय माकन, अध्यक्ष कांग्रेस सोशल मीडिया सुप्रिया श्रीनेत जी, पार्टी के प्रशिक्षण प्रभारी महेंद्र जोशी के अलावा कई विषय विशेषज्ञ संबोधित करेंगे। इस बार कांग्रेस विधानसभा सत्र में प्रदेश में लगातार बढ़ रहे आपराधिक मामलों के सामने सरकार की कमजोरी, ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के झूठ और बढ़ते भ्रष्टाचार को प्रमुख मुद्दा बनाकर सरकार को घेरेगी।

मध्यप्रदेश के 10 जिले अटल पेंशन योजना में टॉप टेन में

बालाघाट देश में अटल पेंशन योजना में पहले स्थान पर

भोपाल (नप्र)। देश में असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को 60 वर्ष की आयु के बाद एक निश्चित पेंशन राशि प्रदान करने के लिए अटल पेंशन योजना चलाई जा रही है। योजना में अधिक से अधिक असंगठित क्षेत्र के लोगों को जोड़ने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा इस वर्ष 1 मई से 15 जुलाई 2025 तक पूरे देश में विशेष अभियान चलाया गया। इस अभियान में नए लोगों को जोड़ने और उनका पंजीयन कराने में मध्यप्रदेश के 10 जिलों ने देश के टॉप टेन जिलों में स्थान बनाया है। इसमें बालाघाट जिले ने देश में प्रथम स्थान हासिल किया है। यह उपलब्धि राज्य के साथ ही बालाघाट के लिए भी बड़ी उपलब्धि है। इस अभियान का फाइनल स्कोर पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण के द्वारा 18 जुलाई को जारी किया गया।

इस अभियान में बालाघाट जिले ने 2992 लक्ष्य के विरूद्ध 12 हजार 507 लोगों को अटल पेंशन योजना से जोड़कर 418 प्रतिशत उपलब्धि हासिल किया है। श्योपुर जिले ने 836 के विरूद्ध 2538 लोगों को जोड़कर 304 प्रतिशत उपलब्धि के साथ दूसरे, अलीराजपुर जिले ने 880 के विरूद्ध 1705 लोगों को जोड़कर 194 प्रतिशत उपलब्धि के साथ तीसरे, उज्जैन जिले ने 5676 के विरूद्ध 10813 लोगों को जोड़कर 191 प्रतिशत उपलब्धि के साथ चौथे, अनूपपुर जिले ने 1342 के विरूद्ध 2542 लोगों को जोड़कर 189 प्रतिशत उपलब्धि के साथ पांचवे, उमरिया जिले ने 990 के विरूद्ध 1819 लोगों को जोड़कर 184 प्रतिशत उपलब्धि के साथ छटवें, छिंदवाड़ा जिले ने 4994 के विरूद्ध 9148 लोगों को जोड़कर 183 प्रतिशत उपलब्धि के साथ सातवें, डिंडोरी जिले ने 946 के विरूद्ध 1720 लोगों को जोड़कर 182 प्रतिशत उपलब्धि के साथ आठवें, शहडोल जिले ने 1936 के विरूद्ध 3445 लोगों को जोड़कर 178 प्रतिशत उपलब्धि के साथ नौवें और दमोह जिले ने 1870 के विरूद्ध 3314 लोगों को जोड़कर 177 प्रतिशत उपलब्धि के साथ देश में दसवां स्थान हासिल किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्पेन प्रवास के अंतिम दिन बारसिलोना के यूनेस्को हेरिटेज साइट्स में शामिल साग्रादा फमिलिया गिरजाघर का भ्रमण किया।

अमेरिका जाने वाले भारतीय छात्रों की संख्या 70 फीसदी गिरी

- ट्रम्प सरकार की पॉलिसी से असमंजस, स्टूडेंट्स को साल बर्बाद होने का डर

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका में पढ़ाई के लिए जाने वाले भारतीय छात्रों की संख्या में 70 फीसदी की भारी गिरावट देखी गई है। ट्रम्प प्रशासन की अंतरराष्ट्रीय छात्रों से जुड़ी नीतियों की वजह से वीजा स्लॉट्स में रुकावट और वीजा रिजेक्शन में अचानक बढ़ोतरी से यह स्थिति बनी है। हैदराबाद ओवरसीज कंसल्टेंट के संजीव राय ने बताया- आमतौर पर इस समय तक छात्र अपने वीजा इंटरव्यू पूरे कर चुके होते हैं और अमेरिका जाने की तैयारी कर रहे होते हैं। इस साल हम रोज पोर्टल चेक कर रहे हैं कि कहीं स्लॉट खुल जाएं, लेकिन यह कई सालों में सबसे खराब स्थिति है। अमेरिकी अधिकारियों ने वीजा स्लॉट्स को अलग-अलग स्टेज में जारी करने का वादा किया था, लेकिन हालात अभी तक क्लियर नहीं हैं, जिससे छात्रों में साल बर्बाद होने का डर बढ़ गया है। वहीं, विंडो ओवरसीज एजुकेशन कंसल्टेंसी के अंकित जैन ने कहा कि स्लॉट्स बुक करने के बावजूद नहीं जा रहे हैं।

जल्दबाजी में कोई निष्कर्ष न निकालें, जांच अभी जारी है

अमेरिकी मीडिया रिपोर्ट पर एनटीएसबी चीफ का बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदाबाद विमान हादसे की प्रारंभिक रिपोर्ट जारी होने के बाद अमेरिकी मीडिया में लगातार अटकलों पर खबरें चलाई जा रही है। जिस पर फेडरेशन ऑफ इंडियन पायलट्स की ओर से आपत्ति भी जताई गई थी। वहीं अब अमेरिका के राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड (एनटीएसबी) की प्रमुख जेनिफर होमेंडी ने एयर इंडिया की फ्लाइट 171 के हादसे की जांच पर जल्दबाजी में निष्कर्ष निकालने के खिलाफ चेतावनी दी है। अमेरिकी मीडिया में खबरें आई थीं कि कप्तान ने गलती से फ्यूल स्विच को बंद कर दिया था, जिसकी वजह से यह हादसा हुआ। इस हादसे में 260 लोगों की जान चली गई थी। होमेंडी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि इस तरह की जांच में समय लगता है। उन्होंने हालिया रिपोर्टों को जल्दबाजी और अटकलें बताया। कहा कि इस स्तर पर निष्कर्ष निकालना गलत होगा। भारतीय विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी), एनटीएसबी की मदद से, यह जांच कर रहा है कि बोइंग 787 ड्रीमलाइनर ने उड़ान भरने के तुरंत बाद इंजन की पावर कैसे खो दी। एयर इंडिया के सीईओ कैंपबेल विल्सन ने लोगों से जांच पूरी होने तक जल्दबाजी में कोई राय न बनाने का आग्रह किया। एएआईबी की शुरुआती जांच के अनुसार, विमान के उड़ान भरने के कुछ सेकंड बाद फ्यूल कंट्रोल स्विच कटऑफ पोजीशन में चले गए थे। इससे इंजन को फ्यूल मिलना बंद हो गया। हालांकि स्विच को 10 सेकंड के भीतर वापस कर दिया गया, लेकिन विमान को नियंत्रित करना मुश्किल हो गया था। कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर में पायलटों के बीच हुई बातचीत रिकॉर्ड हुई है। फर्स्ट ऑफीसर क्लाइव कुंदर को कप्तान सुमीत सभरवाल से यह पूछते हुए सुना गया कि उन्होंने स्विच क्यों हिलाया। कप्तान ने जवाब दिया स्विच बंद नहीं किया।

शिलांग पुलिस की ये कैसी जांच, एक-एक कर तीन आरोपी रिहा

- राजा रघुवंशी हत्याकांड में जमानत मिलने से परिवार में आक्रोश

इंदौर (एजेंसी)। राजा रघुवंशी हत्याकांड के तीसरे आरोपी शिलोम जेम्स को जमानत मिलने के बाद आक्रोश का माहौल है, जिससे राजा की मां उमा रघुवंशी की तबीयत बिगड़ गई। परिवार का आरोप है कि इस साजिश के पीछे सोनम और उसके भाई गोविंद का हाथ है और उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर आरोपियों को जमानत मिली तो वे आत्महत्या कर लेंगे। परिवार अब इस मामले को हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक ले जाने की तैयारी में है, उनका कहना है कि राजा की आत्मा भटक रही है और दोषियों को सजा मिलने तक उसे शांति नहीं मिलेगी। राजा रघुवंशी हत्याकांड के तीसरे आरोपी शिलोम जेम्स को जमानत मिलने के बाद इंदौर में तनाव व्याप्त है। कोर्ट ने जिन तीन आरोपियों को जमानत पर रिहा किया है, उनमें सबसे पहला नाम लोकेंद्र सिंह तोमर का है। लोकेंद्र के फ्लैट का इस्तेमाल सोनम ने राजा की हत्या के बाद छुपने के लिए किया था। वह आठ दिन तक वहीं रुकी रही। दूसरा आरोपी बलवीर अहिरवार उर्फ बल्ला है। बलवीर उसी फ्लैट का सिक्योरिटी गार्ड था। तीसरे आरोपी शिलोम जेम्स को भी कोर्ट ने जमानत दे दी है।

ऑपरेशन सिंदूर

ट्रम्प के दावों पर फिर ऐक्टिव हो गई कांग्रेस

- जयराम बोले-हमें संसद में पीएम से चाहिए जवाब
- कहा-कोई सब्स्टीट्यूट बल्लेबाज अब नहीं चलेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान जंग पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के दावों पर कांग्रेस ने शनिवार को केंद्र सरकार से 3 सवाल किए हैं। पहला- क्या ट्रम्प ने वाकई सीजफायर रुकवाई, वे इसका 24 बार जिक्र कर चुके हैं। दूसरा- क्या ट्रम्प ने व्यापार की धमकी देकर जंग रुकवाई, तीसरा- जंग में 5 लड़ाकू विमान किसके गिरे। दरअसल, ट्रम्प ने शुक्रवार को व्हाइट हाउस में रिपब्लिकन सांसदों के साथ डिनर के दौरान दावा किया कि मुझे लगता है कि भारत-पाकिस्तान संघर्ष में सच में 5 जेट गिरे थे। हालांकि, उन्होंने यह साफ नहीं किया कि ये विमान किस देश के गिरे थे। कांग्रेस ट्रम्प के इन्हीं दावों पर मानसून सत्र में केंद्र सरकार से जवाब चाहती है। मानसून सत्र 21 जुलाई से शुरू हो रहा है। इस मुद्दे पर हंगामे के आसार हैं। संसद शुरू होने वाली है और प्रधानमंत्री को अपनी चुप्पी तोड़नी चाहिए। कोई और नेता नहीं चलेगा। कांग्रेस और पूरा विपक्ष विशेष चर्चा की मांग करेगा और प्रधानमंत्री को जवाब देना चाहिए। हमें कोई सब्स्टीट्यूट बल्लेबाज नहीं चाहिए। केवल प्रधानमंत्री को ही जवाब देना होगा। पीएम मोदी और राष्ट्रपति ट्रम्प की लंबे समय से दोस्ती रही है। फिर चाहे सितंबर 2019 में हाउडी मोदी और फरवरी 2020 में नमस्ते ट्रम्प का आयोजन हो, दोनों का गले मिलने का रिश्ता रहा है। अब पीएम मोदी को संसद में खुद बयान देना होगा। एएपी ने लिखा- मोदी ने भारत की गरिमा से समझौता किया प्रधानमंत्री जी, अब अपनी चुप्पी तोड़िए। ट्रम्प बार-बार इशारा कर रहे हैं कि व्यापार रोकने की धमकी के चलते प्रधानमंत्री मोदी ने भारत की गरिमा से समझौता किया है, लेकिन 56 इंच के सीने का दावा करने वाले नरेंद्र मोदी के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला है। उन्होंने ट्रंप के बयान का हवाला देते हुए कहा, अमेरिका ने भारत और पाकिस्तान, दो परमाणु संपन्न देशों के बीच युद्ध रोक दिया। अगर युद्ध जारी रहता तो कोई व्यापार समझौता नहीं होता। यानी भारत और पाकिस्तान को अमेरिका के साथ व्यापारिक समझौते के लिए तत्काल संघर्ष विराम को मानना पड़ा। कांग्रेस नेता ने मांग की मोदी को संसद में स्वयं खड़े होकर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा पिछले 70 दिनों से किए जा रहे दावों पर स्पष्ट एवं ठोस स्पष्टीकरण देना चाहिए। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने पिछले कुछ सप्ताह के दौरान कई बार यह दावा किया है कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच गत मई महीने में सैन्य संघर्ष को व्यापार समझौते के जरिए सुलझाया।

परिक्रमा

प्रदेश अध्यक्ष बनते ही तीखे तेवर दिखाते हेमंत

अरुण पटेल

भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने पद संभालते ही संगठन को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए अपने तीखे तेवर दिखा दिये हैं। वह संगठन को चुस्त-दुरुस्त करने और जमीनी कार्यकर्ताओं को फिर से पार्टी की मुख्यधारा में सक्रिय करने प्रदेश के विभिन्न अंचलों का दौरा भी कर रहे हैं। अध्यक्ष निर्वाचित होते ही हेमंत खंडेलवाल ने पार्टी पदाधिकारियों के लिए भी एक स्पष्ट मर्यादा की रेखा खींच दी है और यह भी बता दिया है कि जो इससे दांये-बायें चलेगा वह दिक्कत में आ जायेगा। हेमंत खंडेलवाल तकनीकी तौर पर तो भाजपा के महाकौशल अंचल से दूसरे अध्यक्ष हैं लेकिन ठेठ भाजपाई और उसके पूर्व घटक जनसंघ की पृष्ठभूमि के ऐसे पहले नेता हैं जो भाजपा और संघ के संस्कारों में पूरी तरह से ढले हुए हैं। वैसे महाकौशल के शिवप्रसाद चनपुरिया भी अध्यक्ष रह चुके हैं लेकिन वे जनता पार्टी के लोकदल घटक से थे और बाद में भाजपा बनने पर उससे जुड़ गये थे। प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल ने आदिवासी प्रधान जिले बैतूल में आदिवासियों के बीच भाजपा का जनाधार बढ़ाने में अथक मेहनत की और छिंदवाड़ा में कमलनाथ का गढ़ माने जाने वाले जिले में कमल खिलाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

जहां एक ओर प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल ने पार्टी कार्यकर्ताओं को मर्यादा में रहने की सीख दी तो वहीं यह भी कहा कि मैं कोई विशेष योग्यता लेकर नहीं आया, मैं एक सामान्य कार्यकर्ता हूं और पार्टी में मेहनत करने वाले हर कार्यकर्ता का सम्मान होगा। जो भी पार्टी लाइन से दांये-बांये होगा उसे परेशानी होगी। समाज हमसे अच्छे आचरण की अपेक्षा करता है, हम सबकी जिम्मेदारी है कि कार्यकर्ता का व्यवहार जनता की अपेक्षा के अनुरुप हो। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मेरे परिवार से मैं अकेला व्यक्ति राजनीति में हूं और भाजपा परिवार ही मेरा परिवार है, हम सब मिलकर ही संगठन को मजबूत करेंगे। आपकी तरह ही मै सामान्य कार्यकर्ता हूं परन्तु अब अध्यक्ष पद के दायित्व का निर्वहन कर रहा हूं। भाजपा के संगठन महामंत्री हितानंद ने इस बात पर जोर दिया कि हमें हर बूथ पर विजय हासिल करना है और यही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। उनका इशारा इस ओर था कि जिन बूथों पर भी कांग्रेस जीती है उन पर भी अब हमें ही जीतना है।

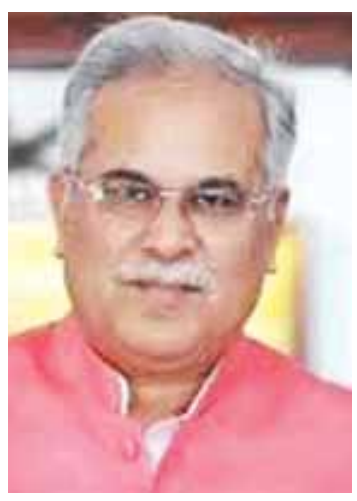

प्रदेश पदाधिकारियों की बैठक में प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल ने कहा कि हम सब एक विचार के लिए कार्य करते हैं और हमारे लिए संगठन ही सर्वोपरि है। राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ जनता की सेवा ही हमारा एकमेव लक्ष्य है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश में मुख्यमंत्री मोहन यादव की अगुवाई में डबल इंजन की सरकार की जन हितैषी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचा कर उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है और हमें संवाद, समन्वय व संपर्क के माध्यम से पार्टी को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाना है। मंडल और जिला स्तर पर जो कार्य अधूरे हैं उन्हें शीघ्र ही प्रदेश पूरे में करना है। जिन जिलों में पार्टी का कार्यालय नहीं है वहां शीघ्र ही सर्वसुविधायुक्त भवन बनाने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिये। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि संगठन द्वारा दिये गये कार्यक्रमों को एक निश्चित समय सीमा में पूरा करना है।

भूपेश बघेल का पुत्र गिरफ्तार

छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में हुए शराब घोटाले के मामले में एक बहुत ही बड़ी कार्रवाई करते हुए ने बघेल के पुत्र चैतन्य बघेल को गिरफ्तार कर लिया है। शुक्रवार 18 जुलाई को तड़के पांच बजे ही बघेल के भिलाई स्थित निवास पर छापामारी की गयी और कुछ घंटों के भीतर ही चैतन्य को गिरफ्तार कर लिया गया। न्यायालय ने 23 जुलाई सुबह 11 बजे तक उन्हें रिमांड पर ईडी को सौंप दिया है। ईडी के अनुसार चैतन्य की गिरफ्तारी प्रिवेंशन आफ मनी लांड्रिंग के तहत की गयी है। पूर्व में दस मार्च को भी ईडी बघेल के यहां छापामारी कर चुका है। तीन हजार दो सौ करोड़ रुपये के शराब घोटाले में बघेल सरकार में आबकारी मंत्री रहे कवासी लखमा 15 जनवरी से ही जेल में हैं। पूर्व आईएएस अधिकारी अनिल टुटेजा और कारोबारी अनवर ढेबर भी डेढ़ साल से इस मामले में जेल में हैं जबकि प्रदेश कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रामगोपाल वर्मा फरार हैं। इस मामले की जांच सीबीआई भी कर रही है। ईडी ने कोर्ट को बताया था कि इस मामले में गिरफ्तार भिलाई के पप्पू बंसल उर्फ लक्ष्मीनारायण ने शपथपत्र में कहा है कि 100 करोड़ रुपये सहेली ज्वेलर्स के जरिये चैतन्य बघेल को दिये गये थे। इसी के आधार पर चैतन्य की गिरफ्तारी की गयी है।

और यह भी

इन दिनों देश व प्रदेश में महिला सशक्तीकरण पर विशेष जोर दिया जा रहा है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डॉ. मोहन भागवत का कहना है कि महिला सशक्तीकरण से देश का विकास संभव है। समाज में महिलाओं को पिछड़ी परम्पराओं और रुढ़ियों से मुक्त किया जाना चाहिये क्योंकि उन्हें पुरुषों के समान सभी योग्यतायें प्राप्त है। उनकी स्वतंत्रता से पूरा समाज लाभान्वित होता है। निश्चित तौर पर भागवत का यह कथन समायानुकूल है क्योंकि यदि एक महिला शिक्षित होती है तो पूरे परिवार को संस्कार देती है और आने वाली पीढ़ी भी संस्कारित होती है।

मंच संचालन कौशल पर विनय उपाध्याय का संवाद आज

भोपाल। जाने-माने उदघोषक, कला समीक्षक और लेखक विनय उपाध्याय मेनिट के कन्वेंशल हॉल में मंच संचालन की कला कौशल पर युवाओं से संवाद करेंगे। 'तूर्यनाद' द्वारा 20 जुलाई को सुबह 11.30 बजे आयोजित इस विशेष सत्र में प्रतिभागी शब्द, भाषा, ध्वनि , विषयवस्तु और वाचिक पक्षों के साथ ही संवाद कला के व्यावहारिक और तकनीकी पहलुओं पर प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। लगभग तीन दशकों की यात्रा में अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर के असंख्य सांस्कृतिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक और सामाजिक सभा-समारोहों का मंच संचालन कर चुके विनय उपाध्याय अपनी अनूठी और गरिमामय शैली के लिए विख्यात हैं। वे अनेक सितारा शख्सियतों के पसंदीदा उदघोषक हैं। यह संवाद सत्र 'द पोडियम टीम' के सहयोग से किया जा रहा है।

अतिक्रमण रोकने गई फॉरेस्ट टीम को लोगों ने घेरा

मारपीट की कोशिश हुई, गुना में जान बचाकर भागे अधिकारी

गुना (नप्र)। गुना जिले के बमोरी क्षेत्र में शुक्रवार रात सरकारी जंगल की जमीन पर अतिक्रमण रोकने गई वन विभाग की टीम पर हमला हो गया। जंगल काटकर ट्रैक्टर से जुताई कर रहे लोगों को जब टीम ने रोका तो आरोपियों ने उन्हें घेर लिया और मारपीट की कोशिश की। टीम के सदस्य गाड़ी वहीं छोड़कर जान बचाकर मौके से भागे। बमोरी पुलिस ने तीन आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। सारेठा बीट के वनरक्षक उपेंद्र रघुवंशी (35) ने आज (शनिवार) बमोरी थाने में शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली थी कि ग्राम बांसखेड़ी निवासी प्रताप सिंह धाकड़, शासकीय जंगल की भूमि पर ट्रैक्टर से जुताई कर रहा है। सूचना के आधार पर रात करीब 10 बजे वन चौकी पाटन से वनपाल प्रभात कुमार वाजपेयी, वनरक्षक शैलेन्द्र रघुवंशी, धर्मराज रघुवंशी और उपेंद्र रघुवंशी मौके पर पहुंचे। टीम ने मौके पर देखा कि सरकारी भूमि पर एक ट्रैक्टर चल रहा है। जैसे ही टीम ने ट्रैक्टर चालक को रोका, वह ट्रैक्टर लेकर ग्राम बांसखेड़ी की ओर भाग गया। टीम ने उसका पीछा किया और ग्राम के पास सड़क पर रोका, तभी प्रताप सिंह धाकड़, रघुवर धाकड़ और प्रद्युम्न धाकड़ वहां पहुंचे और वनकर्मियों को गालियां देने लगे। जब टीम ने विरोध किया, तो तीनों आरोपी डंडे और पत्थर लेकर हमला करने के लिए दौड़ पड़े। प्रताप धाकड़ ने जान से मारने की धमकी भी दी। स्थिति बिगड़ती देख टीम को गाड़ी वहीं छोड़कर भागना पड़ा।

वनरक्षक ने 100 डायल कर पुलिस बुलाई

वनरक्षक ने तुरंत 100 नंबर पर कॉल कर पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और टीम के साथ मिलकर उनकी गाड़ी वापस लाई। आरोपियों पर शासकीय कार्य में बाधा डालने, अतिक्रमण करने और सरकारी कर्मचारियों से मारपीट का प्रयास करने के आरोप में वन चौकी पाटन में वन अपराध प्रकरण दर्ज किया गया। इसके बाद बमोरी थाने में तीनों आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत स्न्ढ्ढक्रदर्ज कर ली गई है। मामले की जांच जारी है।

14 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट..श्योपुर में बुजुर्ग बहा

मुरैना में डैम टूटा, खेतों में भरा पानी, छतरपुर में उफनता नाला पार कर रहे लोग

भोपाल (नप्र)। श्योपुर में नदी में एक बुजुर्ग बह गया। मुरैना में एक डैम टूटने से खेतों में पानी बह गया। छतरपुर में लोग रिस्क लेकर उफनता नाला पार कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश में शनिवार को बारिश का सिस्टम थोड़ा कमजोर पड़ा था। हालांकि मौसम विभाग ने 16 जिलों में बाढ़ का खतरा बताया था, लेकिन दोपहर तक कहीं ऐसी स्थिति सामने नहीं आई है। मौसम विभाग ने 14 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट भी जारी किया है।

इधर, पिछले दिनों हुई लगातार बारिश से कई जिलों में नदी-नाले उफान पर है। श्योपुर की मोरडूंगरी नदी में नहाने गए 60 साल के एक बुजुर्ग बह गए। पुलिस और एसडीईआरएफ की टीम उनकी तलाश में जुटी है।

मुरैना जिले में चंबल नदी का जलस्तर लगातार बढ़ता जा रहा है। शुक्रवार रात 10 बजे से शनिवार सुबह 10 बजे तक नदी का जलस्तर 2 मीटर तक बढ़ गया। बढ़ते जलस्तर को देखते हुए जिला प्रशासन अलर्ट मोड पर आ गया है। चंबल किनारे बसे गांवों में बाढ़ का खतरा मंडराने लगा है।

इन 14 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग ने 14 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें ग्वालियर, मुरैना, श्योपुर, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, आगर-मालवा, राजगढ़, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, डिंडौरी और अनूपपुर शामिल हैं। यहां अगले 24 घंटे में साढ़े 4 इंच तक पानी गिर सकता है। श्योपुर की मोरडूंगरी नदी में नहाने गए 60 साल के एक बुजुर्ग बह गए। उनकी तलाश की जा रही है। श्योपुर की मोरडूंगरी नदी में नहाने गए 60 साल के एक बुजुर्ग बह गए। उनकी तलाश की जा रही है।

मुरैना में अस्थायी डैम टूटा, फसलें बर्बाद- मुरैना जिले के जौरा में शनिवार को तेज बारिश के चलते बुरावली और काशीपुर गांव के बीच बना एक अस्थायी डैम टूट गया। इससे आसपास के खेतों में पानी भर गया और करीब 20 बीघा में खड़ी सोयाबीन और तिल की फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई।

पैसों के लिए रिस्क लेकर पार करा रहे नाला

छतरपुर के गौरिहार में पुल पर 2 फीट पानी ऊपर होने के बावजूद लोग पुल पार कर रहे हैं। पुल पर से बाइक को पार कराने का लोग ?100 और प्रति व्यक्ति ?50 ले रहे हैं। एक वीडियो में बच्चे भी पुल पार करते नजर आए, ये वीडियो जब पुलिस के पास पहुंचा तो थाना प्रभारी और तहसीलदार मौके पर पहुंचे। उन्होंने लोगों को समझाइश दी।

20 को मनाया जाएगा अंतरराष्ट्रीय चंद्रमा दिवस

भोपाल के आंचलिक विज्ञान केंद्र में होंगे क्विज़, लाइव डेमो और चंद्र लैंडर निर्माण जैसे कार्यक्रम

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आंचलिक विज्ञान केंद्र में रविवार (20 जुलाई) को अंतरराष्ट्रीय चंद्रमा दिवस का आयोजन किया जा रहा है। यह दिन मानव इतिहास की उस ऐतिहासिक घटना को समर्पित है। जब पहली बार इंसान ने चंद्रमा पर कदम रखा था।

इस मौके पर बच्चों, विद्यार्थियों और आम नागरिकों के लिए खास विज्ञान गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। जो न केवल रोचक होंगी, बल्कि ज्ञानवर्धक भी। बता दें कि इस आयोजन का उद्देश्य नई पीढ़ी को विज्ञान और अंतरिक्ष की ओर प्रेरित करना और चंद्र अन्वेषण की ऐतिहासिक उपलब्धियों से परिचित कराना है।

नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रमा पर पहला कदम रखा था- यह 20 जुलाई 1969 को नील आर्मस्ट्रांग द्वारा चंद्रमा पर पहला कदम रखने की ऐतिहासिक घटना की याद में मनाया जा रहा है। नासा के अपोलो-11 मिशन ने मानवता के इतिहास में एक नई शुरुआत की। नील आर्मस्ट्रांग के प्रेरणादायक शब्द- यह मनुष्य के लिए एक छोटा कदम है, लेकिन मानवता के लिए एक विशाल छलांग है, आज भी अनगिनत वैज्ञानिकों और युवाओं को प्रेरित करते हैं।

यह होंगे प्रोग्राम

चंद्रमा लेंडर निर्माण कार्यशाला
समय- सुबह 11-00 बजे से दोपहर 1-00 बजे तक
कक्षा 6वीं से 10वीं तक के विद्यार्थियों के लिए है। छात्रों को खुद से चंद्रयान मॉडल बनाने का अवसर मिलेगा। आवश्यक सभी सामग्री विज्ञान केंद्र द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। कार्यशाला में वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और टीमवर्क को बढ़ावा मिलेगा
ओपन हाउस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
समय- शाम 4-30 बजे और 5-30 बजे
सभी उम्र के लोग भाग ले सकते हैं। अंतरिक्ष विज्ञान पर आधारित रोचक और इंटरएक्टिव सवाल होंगे। विजेताओं को सरप्राइज पुरस्कार भी मिलेंगे।

विज्ञान प्रदर्शन

समय- शाम 4-00 बजे और 5-00 बजे
विज्ञान के आश्चर्यजनक प्रयोगों का जीवंत प्रदर्शन होगा। इसमें बच्चे और परिवार विज्ञान को प्रत्यक्ष रूप से समझ सकेंगे।

परिचित ने युवती को कमरे में बंद कर रेप किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरागढ़ इलाके में शुक्रवार शाम एक युवती को उसके परिचित ने कमरे में बंद कर दिया। यहां आरोपी ने पीड़िता के साथ रेप किया। वारदात के संबंध में किसी को भी बताने पर आरोपी ने जान से मारने की धमकी दी और फरार हो गया। देर रात परिजनों और परिचितों के साथ थाने पहुंची पीड़िता ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कराया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।
टीआई अशोक गौतम के मुताबिक 21 वर्षीय युवती दशहरा मैदान के पास रहती है। उसके पिता की मौत हो चुकी है। पीड़िता अपनी छोटी बहन के साथ अकेली रहती है। करीब 15 दिन पहले उसकी पहचान मजदूरी करने वाले आदित्य उर्फ राज से हुई थी। इसी बीच शुक्रवार को वह मदद करने के बहाने युवती के घर पहुंचा, जहां उसकी बहन भी थी। झांसा देकर युवती को अलग कमरे में ले गया। यहां डरा धमकाकर युवती के साथ रेप किया।
बहन को बताया पूरा घटनाक्रम- आरोपी के जाने के बाद पीड़िता ने बहन को पूरा घटनाक्रम बताया। इसके बाद शुक्रवार की रात को दोनों बहने परिचित के साथ थाने पहुंची और आरोपी के खिलाफ केस दर्ज करा दिया। पुलिस ने तत्काल आरोपी को गिरफ्तार किया। शनिवार को उसे कोर्ट पेश कर जेल भेज दिया गया है।

करणी सेना पर लाठीचार्ज के विरोध में हरदा बंद

मौन रैली में 7 हजार से ज्यादा लोग शामिल हुए, पुलिसकर्मियों को निलंबित करने की मांग

हरदा (नप्र)। हरदा में 13 जुलाई को करणी सेना के कार्यकर्ताओं पर पुलिस के लाठीचार्ज के विरोध में शनिवार को बंद रखा गया है। राजपूत समाज ने शहर में न्याय यात्रा निकाली, जिसमें 7 हजार से ज्यादा लोग शामिल हुए। सभी ने मौन रहकर पुलिस की कार्रवाई का विरोध किया।

रैली राजपूत छात्रावास पहुंची, जहां सभी लाठीचार्ज करने वाले पुलिसकर्मियों को निलंबित करने की मांग रखी। समाज के लोगों का आरोप है कि पुलिस ने छात्रावास में घुसकर निर्दोष छात्रों और युवाओं पर बल प्रयोग किया, जो पूरी तरह गलत था।

शुक्रवार को राजपूत समाज के प्रतिनिधियों ने शहर में घूमकर व्यापारियों से बंद में सहयोग की अपील की थी। शनिवार को व्यापारियों ने बंद को समर्थन दिया है। आज सुबह से ही शहर की अधिकांश दुकानें और प्रतिष्ठान बंद हैं।

विधायक ने पुलिस कार्रवाई की निंदा की- विधायक डॉ. आर के दोगने ने कहा कि 12 और 13 जुलाई को जो घटना हुई, उसे लेकर सर्व समाज ने बंद का आव्हान किया है और न्याय रैली निकाली है। पुलिस की कार्रवाई की जितनी निंदा की जाए, कम है। यही मांग है कि शासन द्वारा दोषियों पर कार्रवाई की जाए।

यात्रा में सभी समाज के लोग हुए शामिल

राजपूत परिषद के संभागीय सचिव अजब सिंह राजपूत ने कहा, आज सभी व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर हमें सहयोग किया। ये न्याय यात्रा केवल राजपूत समाज की नहीं थी। इसमें शहर के सभी समाज के लोग शामिल हुए और हमारा साथ दिया। 8 से 10 हजार लोगों के एक साथ होने के बावजूद कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। यात्रा सफल रही।

भोपाल में बीमारी से तंग युवक ने फांसी लगाई

● तीन साल की उम्र से थैलेसीमिया बीमारी से ग्रस्त था

भोपाल (नप्र)। भोपाल छोला मंदिर इलाके में रहने वाले युवक ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। उसका शव शुक्रवार की रात को घर के स्टोर रूम में फंदे पर लटका मिला था। युवक थैलेसीमिया नाम की खास बीमारी से ग्रस्त था। हर महीने उसके शरीर का पूरा खून बदला जाता था। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।
छोला मंदिर पुलिस ने बताया कि राहुल मेहरा पुत्र नर्मदाप्रसाद मेहरा (30) मालीखेड़ी में रहता था। उसके माता-पिता का निधन हो चुका है। वह छोटे भाई के साथ रहता था। इमामी गेट स्थित एक जूस की दुकान में काम करता था। छोटे भाई की शादी हो चुकी है जबकि राहुल की शादी नहीं हुई थी। मोहल्ले में उसके अन्य नजदीकी रिश्तेदार भी रहते हैं।
रिश्तेदार उठा रहे थे बीमारी का खर्च- रिश्तेदार मिलकर राहुल की बीमारी का खर्च उठा रहे थे।

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय

ठिकाने लगाने की कला

स्कूल में जब कोई बात गुरुजी के द्वारा समझाने पर भी किसी स्टूडेंट को समझ नहीं आती तो, वह छड़ी उठाये उसके पास आ खड़े होते और कहने लगते , देख अभी तेरी अक्ल ठिकाने लगाता हूं। तब से जल्दी से बात को न समझने वाले स्टूडेंट की भी खोई हुई अक्ल समय पर ठिकाने लगने लगी। अब तो धीरे-धीरे उन्होंने भी सहज जी अक्ल ठिकाने लगाने की कला सीख ली। अब तो इस कला से वे जरूरत अनुसार कई वस्तुओं को को ठिकाने लगाने लगे ।पुलिस वाले तो आए दिन यहां वहां के अपराधियों की जब तब अक्ल ठिकाने लगाते रहते है। कई की तो उन्हें देखते ही अक्ल ठिकाने आने लगती है।

मोटरसाइकिल चुराने वाले जल्दी पैसा कमाने के लिए उसे किसी को ओने पोने दाम में ऐशो आराम की जिंदगी जीने के लिए ठिकाने लगा देते हैं । साइबर अपराधी धोखे से लूटी रकम को अपनी योजना अनुसार जल्दी ठिकाने लगा देते हैं । कोई अपराध जगत में चर्चित पैसे वाले से रंगदारी की मांग कर कहता है कि चाही गई रकम देदे। नहीं तो तुम्हारी जिंदगी ठिकाने लगा देंगे।

बजट को सुपरफास्ट ट्रेन कि तरह धर ठिकाने लगाने की कला का उपयोग सरकारी अधिकारी बजट के लेप्स होने के चक्कर में उसका उपयोग करते हैं,न वह उनकी कुशल काबिलियत का उदाहरण है । कुछ समय पहले आए बजट को मार्च के

महीने में समाप्त करने की ताबड़ तोड़ मची रहती है। इसे दूर करने के लिए क्या कुछ कारगुजारी करनी पड़ती है ,उसकी माया वही जाने । पर बजट पूरा करने की यह प्रक्रिया किसी कला से कम नहीं है ।

अब देखलो एक क्षेत्र के आसपास के छः गांवों में सात दिन में इकत्तीस तालाब बना दिये। दिन दूना रात चौगुनी स्पीड से काम हुआ। यह काम होना किसी आश्चर्य से कम नहीं। इसे देखते हुए ढाई दिन में बना झोपड़ा याद आने लगता है। अब लोगों की शिकायत पर जांच बैठेगी कितने बने, कितने गहराई तक खुदे, किसकी क्या स्थिति है। सरकारी निर्देश के अनुसार माप दण्ड कितने कुछ पूरे हुए या नहीं? कितने कागजों में खुदे पड़े हैं। फिलहाल तो अधिकारियों और कर्मचारियों ने लाखों रुपए के बजट को ठिकाने लगाने कि कला का उपयोग कर ही लिया। उन्होंने तो इस तरह से काम कर दिया कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। कोई कुछ भी कहता रहे पर उन्होंने समय पर अपना सरकारी उत्तरदायित्व निभा ही दिया। उन्होंने तो इतने कम दिनों में इतना बड़ा काम कर एक नवाचार प्रस्तुत कर दिया। अब यदि कोई संकट आता है तो संबंधित विभाग के मंत्री जी जांच बिठाने की बात कह , शिकायत करने वाले को शांत करेंगे। और निष्पक्ष जांच बिठा देंगे। और कहेंगे कि दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा ।

कविता

ये बारिशों का मौसम...

लाल बहादुर श्रीवास्तव

ये बारिशों का मौसम
ये ठंडी ठंडी हवाएं
मन मयूरा सा गाएं
नाचे झूमे शोर मचाएं
तेज तपन के दिन अब
हाथ मलते रह जाए
उड़ते फिरते नभ बादल
प्रिय का संदेशा कपोत
अब कहां ले जाये?

ये बारिशों का शहर
खुले गड्ढों से भर जाए
समझ नहीं पाये अब
गडडों में जीवन लीला?
कहीं समा नहीं जाये ?
बारिशों का मौसम
भले ही मस्ताना दीवाना
सम्हल कर खूब चलना
कहीं बिजली सर नाचती
कहीं कहीं शिकार बनाती
सर से छाता उड़ उड़ न जाये।

ये बारिशों का मौसम
कहने को तो बारिशों का
मौसम सुकून ले आया है
बाढ़ तबाही उपहार लाया है
कदम दर कदम खतरे
ही खतरे समाएं इर्द गिर्द
सावधान मुस्तैद पल रहना है
मौसम ने भविष्य बताया है।

नक़्शे-कदम कहते हैं

रामेश्वरम तिवारी

इन राहों से कोई गुजरा है, नक़्शे-कदम कहते हैं,
दूर तलक सहरा ही सहरा है, नक़्शे-कदम कहते हैं!

ये वक्त बड़ा ही बेरहम है, इल्तिजा सुनता ही नहीं,
लगता है कि अँधा-बहरा है, नक़्शे-कदम कहते हैं!

मुख में वो मिसरी घोले हैं, पर घट में गरल भरा है,
नकाब चढ़ाए गो हर चेहरा है, नक़्शे-कदम कहते हैं!

ये किसने आँधी उठाई है, ये किसने आगी लगाई है,
दरिया का पानी जो ठहरा है, नक़्शे-कदम कहते हैं!

शिवाले उजाड़े जा रहे हैं, सच पर पर्दा डाले जा रहे हैं,
धर्म का अर्थ बड़ा ही गहरा है, नक़्शे-कदम कहते हैं!

थैंक गॉड, मैं बिहार में वोटर नहीं हूँ

कटाक्ष

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

थैंक गॉड, मैं बिहार में वोटर नहीं हूँ। होता तो इस समय इन पंक्तियों को लिखने की बजाए भगवान चित्रगुप्त की आराधना कर रहा होता। वे ही होते जो पहचान के संकट की इस घड़ी में हमारी मदद कर पाने की स्थिति में होते। माता-पिता अब इहलोक में हैं नहीं। उनका जन्म स्थान और जन्म तारीख इस समय कोई बता पाने की स्थिति में हैं तो वे सिर्फ चित्रगुप्त ही हैं। उनकी खाताबही में तो हर आत्मा का इनवर्ड आउटवर्ड दर्ज़ रहता है। पेरेंट्स के कागज़ मिल नहीं रहे हों तो चित्रगुप्त की शरण में जाने के अलावा और रास्ता ही क्या बचता है ? समस्या रहमान मियाँ को भी फेस करनी पड़ रही होती और मिस्टर थॉमस को भी। उनको और भी ज्यादा, उनके रिलिजन में आत्मा की आवाजाही का रिकार्ड रखने का कोई सिस्टम ही नहीं है। वैसे भी सारी कवायद उनके चक्कर में ही हो रही है। उनसे तो बस थोड़ी सी दर्दमंदी रखी जा सकती है। नए निज़ाम में उसके अपने खतरे हैं। बहरहाल, अपन के लिए बड़ा सवाल ये है कि चित्रगुप्त को प्रसन्न कर पाने में असफल रहने पर अपन क्या करते?

गिव-अप कर देते। भाड़ में जाए वोट देने का अधिकार। न हो वोटर लिस्ट में नाम, न सही। वोट देने से क्या ही बदल जाएगा! पहले भी कितनी बार अंगुली काली कराई है, कभी लोकसभा, कभी विधानसभा, कभी मुन्सीपाल्टी, कभी पंचायत। तर्ज़नी परमानेंट काली होने को है मगर बदला क्या? वही करप्शन, वही महंगाई, वही बेरोज़गारी, वैसी ही बदहाल सड़कें, गिरते पुल, पटरी से उतरती रेलें, वीरान से सरकारी स्कूल, उजड़े-उजड़े से खैराती अस्पताल, जनप्रतिनिधियों की बेशर्मी, झूठ, दोगलापन, पल्टियाँ, वादाखिलाफी, बिलो-बेल्ट हरकतें ङ्क अभी तक कुछ नहीं बदला तो अब क्या बदल जाएगा। बदला है तो सिरिफ अमीरों के लिए। अमीर अधिक अमीर हुए, गरीब और अधिक गरीब। अपन की गरीबी का क्या! वोट दिया तो भी बढ़नी है नहीं दिया तो भी। जितनी बार तर्जनी काली कराओ देश में कालाधन उतने गुना बढ़ जाता है, दोनों में एक खास किसम का को-रिलेशन है। एक दिन सब वोट उनका होगा, धन तो उनका है ही। अपन की तो नाम कट न जाए के चक्कर में एक दिन की दिहाड़ी कट जाने को है। रखे सरकार वोट देने का अधिकार अपने पास, जिसको देना हो दे। अपन तो निकलते हैं यहाँ से।

भ्रम और घबराहट सरजू बाबू में भी हैं मगर वे मेरी तरह पलायन में भरोसा नहीं रखते। बोले - 'एतना अर्ली नरभस नहीं न होईएगा सांतिबाबू। तनी कोशिश करके खोजिएगा त कहीं से न कहीं से एक सेट माई-बाप का जुगाड़ हो जाएगा। अभेलेबल हुईए त उन्हीं को पेरेंट नहीं न बना लीजिएगा। दुनियादारी में सफल लोग गदहा को बाप बना लेते हैं, आपको तो।।'

'वही तो नहीं हो पाएगा सरजू बाबू। बाप बदलने की कला आती तो अपन भी कहीं के मंत्री सांसद विधायक होते। जिन्दगी दिहाड़ी मजूरी करते पाँच किलो राशन के भरोसे कटती नहीं।'

'डेमोकिरसी के रक्शा का सवाल बा सांतिबाबू। आपन के भोट देने का अधिकार का रक्शा तो करना ही पड़ेगा।'

'बहुत भोले हैं आप बाबू सरजू परसाद, इनको अधिकार देना ही होता तो इनके ही जारी किए हुए दस्तावेज़ ये मान्य नहीं कर लेते। ये देने की नहीं छीनने की कवायद है। जब छिना ही जाना है तो टाईम भेस्ट क्यों करना। कोउ नृप होई हमै का हानि।'

इस बीच एक खुशखबर आई। अपन का फॉर्म अपलोड गया। बीएलओ साब खुदऐ पूरे टोले के फॉर्म भर दिए हैं। न घर आए, न फॉर्म दिया, न दस्तखत कराए, पूरा गाँव-टोला का फॉर्म अपलोड कर दिए। इफिशियंट बिहार! लोग नाहक बदनाम करते हैं। अब डर सिर्फ इतना है कि जैसे नाम चढ़ाया है वैसे ही काट न दें। काट भी दें तो कोई बात नहीं वोट देकर क्या हासिल कर लेंगे हम। रहनुमाओं से बस इतनी सी इल्तजा है आर्यावर्त का नागरिक बना रहने दें।

ख्यालों से बाहर निकलकर बिहार से एम्पी में लौट आया हूँ। बकरे की अम्मा कब तक खैर मनाएगी। आज नहीं तो कल भगवान चित्रगुप्त की मेहर तो एम्पी में भी लगेगी। तब की तब देखी जाएगी। फिलवक्त नीली छतरीवाले का शुक्रिया अदा कर रहा हूँ - 'थैंक गॉड, मैं बिहार में वोटर नहीं हूँ'।

अवनि-अंबर मन के अंदर

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद

अवनि-अंबर मन के अंदर
हर साँस तुम्हारे होने का
क्यों लगता अनंत विस्तार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

मेघों के रंगों में रंगकर
रूप पाश से वीचि भंग कर
हवा में अंगराग भरकर
तुम मेरे मानस के तट पर
छवि उकेरते हो प्रतिपल
क्यों लगता तेरा आकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

समीर में उर का प्रकंपन
नेह में स्वर लहरी स्पंदन
राह बन गए, जैसे वन चंदन
अश्रु में भी उजला निमंत्रण
बिन माँगे तुमने दे डाला
क्यों स्निग्ध का पारावार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

रोके न रुके जीवन की आस
बढ़ती जाती अब संचित प्यास
पल भर न मिले कोई अवकाश
रचने को चले हम-तुम इतिहास
क्षण में सारे अभिमान वार
क्यों शांत,अविराम पुकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

लघुकथा

घमंड चकनाचूर

सूर्यदीप कुशवाहा

एक सुंदर लड़की थी। उसमें अपनी सुंदरता का अहंकार था। उसे जो भी लड़का विवाह के लिए देखने आता, उसको बेइज्जत करके भगा देती थी। उसकी इस हरकत से उसके माता-पिता बहुत दुःखी थे। मेरी लड़की को विवाह योग्य जीवन साथी नहीं मिलेगा क्या? यही सोच - सोचकर बेचारे दोनों चिंतित रहते थे।

जो कोई रिश्तेदार जैसा भी वर लेकर आता तो वह लड़की अपनी सुंदरता की बखूबी बखान करती और विवाह बाद कोई काम न करने को कहती। यह सुनकर लडके वाले उल्टे पांव लौट जाते थे। एक दिन एक कलूटा लड़का उसे देखने आया और उसकी बात सुनकर कहा, देवी ! तुम तो वास्तव में सौंदर्य की देवी हो, तुम मेरे हृदय मंदिर में विराज हो सकती हो, लेकिन मेरे घर में नहीं। तुम्हारे सौंदर्य पर पति रिझेगा न कि घर के बाकि लोग। सौंदर्य से सिर्फ दाना -पानी नसीब नहीं होता है।÷

लड़की उसका जवाब सुनकर हतप्रभ होकर बोली, तुम्हें भला सुंदर पत्नी कैसे मिलेगी? जिसे सुंदरता चाहिए होता है, उसे भी सुंदर होना पड़ेगा, लेकिन अफसोस तुम तो कलूटे हो, मेरे लायक नहीं हो।

कलूटा लड़का बोला कि घमंड सिर में बैठी हो तो अच्छा इंसान भी रंग से पहचाना जाएगा और तुम्हे कभी भी अच्छा वर कैसे मिल सकता है। सच बात तो यह है कि जो प्यार से किसी के सामने झुक जाए उसे सब कुछ मिल जाता है और घमंड में चूर रहने वाला सदा प्यार का भूखा रहता है।

उस लडके की बातें सुनकर सुंदर लड़की चुप हो गई। उसका घमंड चकनाचूर हो चुका था, क्योंकि उसे कलूटे लड़का से आज एक काम की बात जो सीखने को मिल गई थी। लड़की ने अब मन ही मन स्वयं को बदल लिया था।

लघुकथा

औकात

सुरेश सौरभ

ऑटो खड़ा किया। चंद कदम घर के अंदर बढाये ही थे कि दोनों बच्चे हर्षोल्लास से उसके लिपट गये- पापा आ गये, पापा आ गये...लाओ पहले हमें दो ..नहीं पहले हमें दो.. बच्चों को थैला पकड़ा दिया। बच्चे थैले से अपनी-अपनी चीजें खोजने में तल्लीन हो गये। वह धप्प से चारपाई पर बैठ गया। पत्नी ने पानी का गिलास पकड़ाया। सर्रऽऽऽ..एक ही सांस में पूरा गिलास खत्म कर दिया, फिर अपनी दोनों पलकें मूंद शांति से पलंग पर पसर गया।

क्या हुआ, आज ज्यादा थक गये क्या? पत्नी उसके सिर पर हाथ फेरते हुए विनम्र भाव से बोली।

नहीं बस यूँ ही लेट गया। पलकें खोलते हुए वह भर्राये स्वर में बोला।

अरे ! तुम्हारी आँखों में आँसू।

कुछ नहीं बस ऐसे ही। आंखें मलते हुए वह बोला।

उठो अच्छा, अब मुँह-हाथ धो लो खाना लगाती हूँ।

वह उठा, मुँह-हाथ धोकर फारिग हुआ, देखा, अब पत्नी की आँखें डबडबाई हुई हैं। अरे ! अब तुम्हें क्या हुआ? आश्चर्य से वह बोला।

वीडियो देखा है, मोबाइल पर आपका।

ओह ! वायरल हो गया।

हाँ।

तब तो बच्चे भी।

नहीं नहीं बहुत जिद कर रहे थे, पर मोबाइल न दिया, सोचा कहीं देख लेंगे तो उन्हें भी तकलीफ होगी।

सहीं किया, अरे ! जब तक न देखें, तब तक अच्छा, अब क्या करें अमीरों का, नेताओं का ,पेट हम गरीबों को ही पीट कर ही भरता है।

टूटी-फूटी मराठी जब बोल लेते हो, तो बोलते क्यों नहीं?

सीमा चाहे हिंदी बोलूँ या मराठी हमारी औकात एक रिक्शेवाली है। जब जो चाहता है, हमें हमारी औकात बताकर चला जाता है।

फिर भी कोशिश करो।

बहुत करता हूँ, पर अम्मा की दी हुई वह जबान, उनके लाड़-प्यार में पगे वह शब्द, वह भाव, चाह कर भी मैं भुला नहीं पाता।

अगर फिर हिंदी बोलने पर पीटे गये तो...

पति खामोश। शून्य में खो गया।

अब उसकी पीठ पर सीमा दर्द वाला मरहम मल रही थी। उसकी पीठ का दर्द कम होकर हौले-हौले, अब उसके हृदय पर, उसकी आत्मा पर उतरता जा रहा था।

पुस्तक समीक्षा

कल्पना मनोरमा

समीक्षक

आधुनिक चेतना की मूल्यपरक जीवंत कहानियां

वरिष्ठ पत्रकार और साहित्यकार प्रमोद भार्गव की कहानियाँ समकालीन समाज की विडंबनाओं और ज्वलंत मुद्दों की तह में उतरती हैं। उनका कथा-संग्रहॉप्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियाँ बीस कहानियों का ऐसा दस्तावेज़ है, जो न केवल साहित्यिक संवेदना से समृद्ध है, बल्कि समाज की उन परतों को भी उजागर करता है जिन्हें आमतौर पर उपेक्षित कर दिया जाता है। यह संग्रह पत्रकार की दृष्टि और साहित्यकार की भाषा का सुंदर संगम है। प्रमोद भार्गव की सबसे बड़ी ताकत, विषयों की विविधता और उनके प्रति खोजी दृष्टिकोण। चूँकि वे लंबे समय से सक्रिय पत्रकार रहे हैं इसलिए उनके पास ज़मीनी अनुभवों का बड़ा कोष है। वे महज़ कहानियाँ नहीं लिखते, बल्कि उन कहानियों के जरिए समाज के भीतर छिपी विसंगतियों, विडंबनाओं और विरोधाभासों को उजागर करते हैं।

'परखनली का आदमी' एक ऐसी कहानी है जो कृत्रिम गर्भाधान, विज्ञान की नैतिक सीमाओं और पितृत्व की पहचान के संकट को गहराई से उठाती है। यह कहानी सिर्फ जैविकी या विज्ञान की नहीं, एक गहरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व की कथा बन जाती है। इसमें लेखक ने दिखाया है कि तकनीकी उन्नति के बावजूद मानव संबंधों की जटिलता और संवेदना कितनी उलझी हुई है यानी 'परखनली का आदमी' तकनीक की प्रगति के साथ भावनाओं के क्षरण की मार्मिक चेतावनी है। यह दर्शाती है कि जब जीवन केवल प्रयोग बन जाए और रिश्ते केवल यंत्रवत प्रक्रिया, तो मनुष्यता खो जाती है। यह कथा संवेदना और विज्ञान के बीच संतुलन की आवश्यकता रेखांकित करती है।

'कोख में शिशु' कहानी की शुरुआत ही पाठक को एक गहरे भावनात्मक झटके से परिचित कराती है। जहाँ एक अजन्मी कन्या माँ से संवाद करती है और भ्रूण-हत्या के भय से प्रश्न उठाती है। यह संवाद कल्पना में है, पर यथार्थ से गहरे जुड़ा हुआ महसूस होता है। मातृत्व, अपराधबोध और सामाजिक दबावों की त्रासदी को लेखक ने अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। यह एक ऐसी कथा बन जाती है, जो पाठक के भीतर प्रश्नों की गूँज छोड़ जाती है।

'पहचाने हुए अजनबी' कहानी में अजनबियत का भाव केवल बाहरी नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक दूरी से उपजा है। जिसे अंततः बच्चे 'मनु' के स्पर्श और निश्छल हँसी में पिघलते देखा जाता है। यह अंत हमें याद दिलाता है कि संबंध खून से नहीं, अपनत्व से बनते हैं। लेखक ने बहुत सहज ढंग से एक कानूनी, नैतिक और भावनात्मक संघर्ष को एक मानवीय स्पर्श से विराम दिया है।

यह कहानी आज के समय में नियोजित गर्भाधान, सरोगेसी, और पारिवारिक स्वीकृति जैसे मुद्दों पर गहरी बात कहती है, बिना किसी शोरशराबा के। कहानी 'पूर्ण-बंदी' की शुरुआत ही पाठक को एक विडंबनापूर्ण दृश्य में खींच लेती है, जहाँ शंख, घंटियाँ, श्लोक और संस्कृति की तथाकथित रक्षा के बीच आधुनिक अपार्टमेंट में प्रज्ञा जैसे पात्र का प्रवेश होता है। लेखक ने परंपरा और आधुनिकता के टकराव को अत्यंत व्यंग्यात्मक लेकिन सधी हुई भाषा में प्रस्तुत किया है।

मिश्रा जी जैसे पात्रों के माध्यम से धार्मिकता के बाह्य प्रदर्शन और गंभीर चिंतन के अभाव को बेनकाब किया गया है। प्रज्ञा का व्यंग्यात्मक सवाल,÷आपको तो किसी कॉलेज में संस्कृत या दर्शन शास्त्र की प्रोफेसर होना चाहिए था? इस पूरी स्थिति का तीखा विश्लेषण बन जाता है। यह कहानी सांस्कृतिक आडंबर, स्त्री चेतना और सामाजिक दिखावे पर बात करती है। लेखक द्वारा

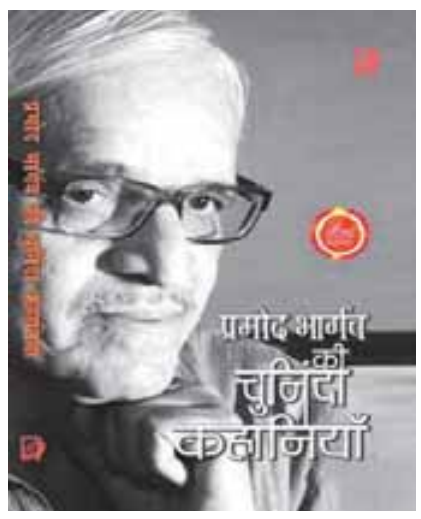

चुना गया यह शीर्षक 'शीलभंग स्त्री और लोकतंत्रीय तमाशा' अपने आप में अत्यंत तीव्र, मार्मिक और विचारोत्तेजक है। यह शीर्षक सिर्फ कथा की विषयवस्तु का संकेत नहीं देता, बल्कि समकालीन समाज और राजनीति में स्त्री की स्थिति, व्यवस्था की संवेदनहीनता, और न्याय के खोखले ढांचे पर एक तीखा व्यंग्य करता है। शीलभंग स्त्री कहें या स्त्री जीवन का त्रास यानी स्त्री की देह और अस्मिता पर होने वाले हमले केवल व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक और मानसिक त्रासदी हैं। वहीं 'लोकतंत्रीय तमाशा' उस विरोधाभास को सामने लाता है जहाँ एक ओर संविधान समानता और न्याय की बात करता है, लेकिन व्यवहार में पीड़िता को ही संदेह और अपमान का पात्र बनना पड़ता है। यह शीर्षक कहानी के मूल स्वर स्त्री के न्याय की तलाश और व्यवस्था की विफलता को बखूबी समेटता है, और पाठक को उस मर्म की ओर ले जाता है जहाँ लोकतंत्र की असल परीक्षा होती है। इस कहानी का शीर्षक केवल नाम नहीं, एक सवाल है। समाज और लोकतंत्र पर।

'लौटते हुए', और 'किराएदारिन' जैसी कहानियाँ रिश्तों की ऊपरी परत को हटाकर उसमें छिपी अजनबियत, अकेलापन और विस्थापन को उभारती हैं। इनमें पात्र भले ही परिचित लगते हैं, लेकिन उनके भीतर का अकेलापन, असुरक्षा और अस्तित्व का संकट उन्हें 'पहचाना हुआ अजनबी' बना देता है। 'फेसबुक' और 'ल से लड़की' बेहद समकालीन कहानी है जो सोशल मीडिया की दुनिया में रिश्तों की आभासी प्रकृति और उसकी सीमाओं को उजागर करती है। प्रमोद भार्गव यहाँ भी तकनीक के बढ़ते प्रभाव और सामाजिक सरोकारों के बीच टकराव को बहुत सूक्ष्मता से पकड़ते हैं।

उसी तरह 'कहानी विधायक विद्याधर शर्मा की' सत्ता, भ्रष्टाचार और राजनीति के चरित्र को उजागर करती है। यह कहानी उस चेहरे को बेनकाब करती है जो लोकतंत्र की आड़ में जनतंत्र का शोषण करता है। प्रमोद भार्गव जी की यह कथा शैली कहीं भी उपदेशात्मक नहीं होती, बल्कि वह यथार्थ को इस तरह सामने रखती है कि पाठक खुद निर्णय ले सके कि वह किस परिवेश में जी रहा है। इस संग्रह की कहानियों में एक स्पष्ट सामाजिक सरोकार, तीव्र संवेदनशीलता, और विचारशीलता है। उनके पात्र आमजन हैं। किसान, किराएदार, शिक्षक, पत्रकार, और घर-गृहस्थी में उलझी स्त्रियाँ। वे ऐसे पात्र नहीं जो समाज से अलग हों, बल्कि समाज के भीतर से उभरते हैं और उसी में उलझते हैं। भाषा सहज, साफ़ और संवादधर्मी है। कहीं-कहीं भाषा में पत्रकारिता की सी तेजी और तथ्यात्मकता भी दिखती है, जो पाठकों को तुरंत बाँध लेती है। संवादों में वास्तविकता और कथा टोन में विनम्र लेकिन स्पष्ट आलोचना है। कुल मिलाकर, 'प्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियाँ' एक ऐसा संग्रह है जो समकालीन हिंदी कहानी को समाज के आईने में देखने का अवसर देता है। यह संग्रह पत्रकारिता और साहित्य के बीच पुल की तरह है, जहाँ शब्दों में संवेदना भी है और तथ्यों में सच्चाई भी।

प्रमोद भार्गव जी की 'अपनी बात' इस बात को रेखांकित करते है कि कहानी रचना केवल कल्पना नहीं, अनुभव, जटिल प्रश्नों और संवेदनशील मुठभेड़ों का परिणाम होती है। वे कथा को सृजनात्मक कर्म मानते हैं, जिसमें परिवेश, पात्र और भाषा की शुद्धता के साथ लेखक का आत्मसंघर्ष भी शामिल होता है। यह स्पष्ट करता है कि हर कहानी लेखक की अंतःदृष्टि, सामाजिक अनुभव और कलात्मक अभ्यास का परिणाम है। यह संग्रह उन सभी पाठकों के लिए अनिवार्य है जो हिंदी साहित्य के साथ एक पत्रकार की नजर से सामाजिक यथार्थ और विचार की कसौटी पर खुद को कसना चाहते हैं।

पुस्तक का नाम-प्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियां/लेखक-प्रमोद भार्गव/
मूल्य -5535 रुपए
प्रकाशक- प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, गाजियाबाद

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनहद विचारों की सारथी भारतीय कला

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

वेद, ब्रह्मण, आरण्यक, उपनिषद, पुराण आदि भारत के प्राचीन से प्राचीनतम धरोहरों को, ज्ञान-विज्ञान, कला-संस्कृति को, सृष्टि के रहस्यमयी दुनिया को अपने में इस तरह समेटें है जिसका ज्ञान हो जाने पर मनुष्य, जैसे अपनी दिशा ही भूल बैठे और खो जाए किसी अथाह से एक अलग ही दुनिया में जहाँ किसी भी चीज का कोई ओर-छोर ही ना हो, जहाँ जाना विशेष हो जाना होता हो और इससे भी विशेष कि विशेष होने के बाद भी सृष्टि में शून्य से विलग नहीं हो पाना हो। जिस भांति ऋग्वेद के दसवें मंडल के 129वें सूक्त, नासदीय सूक्त के सातों मंत्रों में जीवन के रहस्यमय परिस्थितियों, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, अस्तित्व आदि का जिक्र है और बड़े विषद रूप में है बावजूद इसके आश्चर्य यह कि अंत में सब कुछ होकर भी कुछ नहीं होने की बात है, कौन? कैसे? प्रश्नों से रहस्यमय परिस्थितियों को और अधिक रहस्यमय में बदल देने की बात है ताकि भविष्य के गर्त में क्या है जिसके हेतु आने वाला समय, आने वाले लोग भी अधिक से अधिक समृद्ध तरीके से रहस्यों से पर्दा उठा सकें पर ऋग्वेद के इस सूक्त में जो भी बातें हैं यथा-

तब न तो सत् था न ही असत् था, अंतरिक्ष, आकाश, जीवन, मृत्यु, दिन-रात, जैसी भी कोई बातें नहीं थीं। तब बस और बस तमस था, अज्ञानता, अंधेरा।

तम् आसीत्तमसा गुहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वऽइदम्। (ऋ10/129/03)।

शून्य और शून्य से बिलग की बात का रहस्य यहाँ भी ज्यों का त्यों बना हुआ है पर हमारे वेदों की संपन्नता पर अगर गौर किया जाए तो कहा जा सकता है कि इससे इतर कुछ था ही नहीं या है भी नहीं और शायद आगे होगा भी नहीं। वेद-पुराण

जैसी थाती हमारे लिए हर क्षेत्र में हमारे संपन्नता को दर्शाते हैं। भारतीय कला और संस्कृति के लिए भी।

कला, कला ही है फिर चाहे भारतीय कला हो, पेरिस की कला हो या अन्यत्र कहीं की कला हो। कार्य लगभग एक सा ही है, हाँ समय के साथ कुछ आगे पीछे जरूर हो सकता है। आज हम चर्चा करेंगे भारतीय कला की, विशेषतः प्राचीन भारतीय कला की जिसकी चर्चा कभी मध्य एशिया तक होती थी और जो आज भी अपने अथाह गहराई युक्त विशालता के साथ मौजूद है। भारतीय कला के प्राचीनता एवं संपन्नता को समझने हेतु पाश्चात्य लिखित पुस्तकों से बिलग प्राचीन भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, वेदों, सहित धरोहरों से भरे ग्रंथों को समझना होगा, भरोसा करना होगा अपनों पर। कला समय के साथ भले ही अपने स्वरुप को बदल ले पर बिना कला जीवन को सोचना बेमानी साबित होगा। सृष्टि के सृजन के साथ ही जुड़ी हुई है कला बस हमें अपने दृष्टि को विशालकाय इतना विशालकाय में परिवर्तन करना होगा कि हर पहलू पर गहनता के साथ विचार करने में कठिनाइयों का सामना न करना पड़े और किसी भी एक पक्ष के अतिइंद्रीय होने का खतरा न हो, जहाँ सभी पक्षों को खुलकर पनपने का मौका मिल सके। यजुर्वेद के पच्चीसवें अध्याय के पहले मंत्र-

आदित्याँ श्मश्रुभिः पन्थानं भ्रूभ्यां द्यावापृथिवी वत्तौभ्यां विद्युतं कनीना काभ्यां शुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा.

में सूर्य के किरणों, विम्बों से तुलना में गजब का स्वातंत्र्य दर्शित हुआ है आँखों के ऊपर और नीचे के पलकों की तुलना आकाश और पृथ्वी के विशाल, अनहद फलकों से देखी गई है मध्य में पुतली तेज किरणों युक्त आदित्य को दिखाती है, दोनों तरफ सफेद स्थान रिक्तता के किसी भी तह तक के विशालता तक को प्राप्त करने की बात है। कला और उसके अथाह संसार का सार जानने हेतु हमें और भी ग्रंथों के अध्ययन की दरकार है।

समय के साथ लोग, शासक एवं रहन-सहन जिस तरीके से बदलता है कुछ ऐसे ही कला भी अपनी यात्रा तय करती है, हाँ इसी बीच कभी वो उफान पर होती है तो कभी किसी के शासन में सुप्तावस्था को प्राप्त कर जाती है पर होती जरुर है। गुहाओं से प्राप्त शिकारों के चित्र, सिन्धु से प्राप्त कृतियाँ, सारनाथ, भरहुत,

अमरावती, अजन्ता, मथुरा, कोणार्क, खजुराहो आदि-आदि से प्राप्त कृतियाँ भारतीय थाती के समृद्धि हेतु काफी है। भारतीय कला पर सूक्ष्मतम् दृष्टि डाली जाय तो भान होगा कि भारत के घर-घर में पग-पग पर कला है। पूजा-पाठ, शादी-विवाह, छोटे-मोटे आयोजनों में किये जाने वाले कार्यों में कला है, अलंकरण तो जैसे हमसफ़र है हर राही का। कदम-कदम पर अलंकरण, साज-सज्जा, रंग-रोगन देखने को मिल जाता है। कहीं-कहीं तो कोहबर पर इतना बेजोड़ कार्य कर दिया जाता है कि प्रगतिशीलता के दौर की अच्छी-अच्छी कलाकृतियाँ उसके आगे पानी भरती सी जान पड़ती हैं। भारतीय कला सिर्फ सौंदर्यबोध हेतु ही नहीं बल्कि उद्देश्यपरक भी है। स्वास्तिक, चक्र, गज, अश्व, सूर्य आदि का अंकन हम अक्सर करते आये हैं जिसके मूल में जाने पर इनके पीछे की लंबी-लंबी कहानियाँ भी हैं और जिसके जानने भर से उस कृति के साथ ही उस रिवाज का महत्व भी कई गुना बढ़ जाता है और भारतीय कला पर गर्व करने सी बात भी हो जाती है। स्वास्तिक की बात करी जाय तो यह मानव के सर्वोत्तम मांगलिक चिन्हों में गिना जाता है जो चारों दिशाओं में फैले सूर्य के प्रकाश का परिचायक है या चतुर्मुखी विकास के साथ भी इसे जोड़ा जा सकता है। स्वास्तिक के अंकन मात्र से कृति का अस्तित्व कितना वजूदयुक्त हो जाता है समझने वाली बात है। भारतीय कलाकार शुरू से ही एक तपस्वी की भांति कृतियों के निर्माण में लगे होते थे, कलाकार तपस्वी ही होता है। अजन्ता इसका जीता जागता उदाहरण है जहाँ कई-कई सौ वर्षों तक लगातार कार्य होता रहा वो भी बिना किसी चहल-पहल के और वो जब लोगों के सामने आया तो लोगों को दांतों तले उंगली दबाने पर विवश होना पड़ा। विषय, शैली, अलंकरण, लोच, लय, रेखा, रंग हर मामले में अकेले अजंता ही पूरे वैश्विक पटल पर भारी है ये बात कई विदेशी समीक्षक भी मानते हैं। भारतीय कला में एक बात जो आम है वो है सहायक आकृतियाँ जहाँ संकेतों का भी अच्छा उपयोग हुआ है। कमल, कल्पवृक्ष, फूल पत्तियों से सुसज्जित घड़ा, पेड़-पौधे, बादल, सभी कृतियों में अपने साथ कुछ न कुछ विशेष लिए हुए होते हैं। कमल विष्णु के नाभि से भी संबंधित है और इसी बहाने ब्रह्म और सृष्टि से भी इसका संबंध जुड़ता चला जाता है और कृति विषद व्याख्या के ओर अग्रसर हो जाती है। बात कमल के पत्तों की हो तो वो लगभग गोल एवं ढाल की तरह होते हैं जो डूबते को सहारा युक्त भाव लिए है, इससे प्राप्त रेशों से बत्तियां बनाई जाती है। पूर्व में कपड़े भी बनते थे जो कई रोगों से निदान में सहायक होते थे।

कमल का जिक्र कई धर्मों में है, साहित्य एवं कविता में भी कमल का सहारा लिया गया है। ऐसे ही कृतियों में अंकन होता है कल्पवृक्ष का, पुराणों में इसे दैवलोकीय वृक्ष का दर्जा प्राप्त है, समुद्र मंथन से प्राप्त रत्नों में एक ये भी था। ऐसी मान्यता है कि इस वृक्ष से जो भी मांगा जाता है जरूर पूरा होता है मतलब साफ है कि कलाकृतियों में मनोकामना पूर्ति जैसे भाव भी पाये जाते थे अभी भी कलाकृतियों में तमाम स्वप्न, चाह, प्रेम आदि देखने को मिल जाते हैं। कलाकार स्वप्नद्रष्टा की भांति हमेशा अपने सृजन में लीन रहते थे, रहते हैं और आगे भी रहेंगे। भारतीय कला सदा से संपन्न एवं समृद्ध रही है और हमेशा हीद रहेगी बस हमें अपने में भारतीयता को जिंदा रखना होगा। संलग्न कलाकृति साभार गूगल से है।

लघुकथा

मायका

आरती चित्तौड़ा

घर के काम निपटाकर नेहा ने सोचा कि पड़ोस में रहने वाली अंजू भाभी से आम के अचार की रेसिपी पूछ कर आती हूँ ।उनके हाथ का आम काअचार बहुत ही स्वादिष्ट होता है। यह सोचकर वह चली गई और उसने डोर बेल बजाई अंजू भाभी ने कहा - आओ नेहा , नेहा जैसी अंदर गई तो उसने देखा और कहा- अरे भाभी आप तो कहीं जाने की तैयारी कर रहे हो । अंजू भाभी ने कहा - हां, नेहा मैं अपने मायके जा रही हूं । नेहा बोली- बहुत अच्छी बात है, भाभी आप अपनी मम्मी से मिलकर आ जाओ फिर मैं आती हूं । अंजू ने कहा - नेहा तुम्हें पता नहीं है तुम अभी कुछ महीने पहले ही इस कॉलोनी में रहने आई हो। मेरा मायका बहुत बड़ा है। हम 20 से 25 बहने हैं। मेरी कुछ बहनें सर्विस करती है, जो बाहर दूसरे शहर में रहती है, और कुछ अभी पढ़ रही है। नेहा ने आश्चर्य से पूछा - ऐसे कैसे भाभी? अंजू भाभी ने कहा - मैं अनाथ आश्रम में पली-बढ़ी हूं मेरे माता-पिता कौन है? किसी को नहीं पता मुझे भी नहीं पता। हमारी सब की शीला आंटी है वही हमारी मां है। उन्होंने ही हमें पढ़ाया लिखाया काबिल बनाया,

और अच्छा लड़का देखकर शादी कर दी। और पता है वह इतनी अच्छी है कि हम सबको साल में एक बार गर्मी की छुट्टियों में रहने के लिए बुलाती है। ढेर सारी बातें करते हैं। हम सब मिलते हैं और पुरानी बचपन की याद ताजा होती है। थोड़े दिन रहकर वापस अपने-अपने घर संसार में लौट आती हैं ।

नेहा ने कहा - अंजू भाभी आपका मायका तो सबसे अलग और सबसे अनूठा है । हां नेहा सोचती हूं तो गर्व होता है, पर ईश्वर से प्रार्थना करती हूं की हर लड़की के नसीब में उसके अपने माता-पिता वाला मायका हो क्योंकि हर जगह हमारी अच्छी प्यारी शीला आंटी नहीं जा सकती। यह सुनकर नेहा भाव विभोर हो गई और उसने अंजू भाभी को गले लगा लिया।

'बरसाती नदियाँ' और 'सबको पीछे छोड़ चुका है आदमी संग्रह लोकार्पित

भोपाल। आईसेक्ट पब्लिकेशन, वनमाली सृजन पीठ, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में युवा कवि संजय सिंह राठौर के कविता संग्रह 'बरसाती नदियाँ' और युवा रंगकर्मी विक्रांत भट्ट के कविता संग्रह 'सबको पीछे छोड़ चुका है आदमी' का लोकार्पण किया गया। उल्लेखनीय है कि लोकार्पित दोनों पुस्तकें साहित्य अकादमी, संस्कृति परिषद्, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन भोपाल द्वारा प्रकाशनार्थ श्रेष्ठ पाण्डुलिपियों में स्वीकृत हुई है। साहित्य अकादमी द्वारा दोनों पुस्तकों के प्रकाशन हेतु पुरस्कार स्वरूप अनुदान भी प्रदान किया गया है। आकर्षक कलेवर के साथ दोनों संग्रहों का प्रकाशन आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा किया गया है।

लोकार्पण अवसर पर वरिष्ठ कवि- कथाकार, निदेशक विश्व रंग एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि यह दोनों कवि हमारे हरेक कार्यक्रमों और समारोहों में अपनी भूमिका का निर्वहन करते आ रहे हैं, आज इनका दिन है, इसलिए संचालन मैं करूँगा। उनके इतना कहते ही कथा सभागार तालियों से गूँज उठा।

संतोष चौबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि संजय की कविताओं में मजदूर वर्ग की चिंता, उनके संघर्ष, परिवार, माता-पिता, पास पड़ोस, अपने परिवेश के प्रति प्रेम गहरे से परिलक्षित होता है, वही बाजारवाद के विरुद्ध चिंताएँ भी उनकी कविताओं में गहराई से आती है। विक्रांत रंगमंच की पृष्ठभूमि से आते हैं, यह उनकी कविताओं में भी झलकता है। उनकी कविताओं में नाटकीयता के बिंब होते हैं। उन्होंने दोनों कवियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि दोनों ही कवि भविष्य के प्रति असीम संभावनाओं से भरे कवि हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश शासन के निदेशक डॉ. विकास दवे ने कहा कि संजय सिंह राठौर की कविताओं में प्रतिकों का बखूबी प्रयोग हुआ है, जिसके माध्यम से वह अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं, उन्होंने उनकी कविता टाँड और बोनसाई का जिक्र करते हुए यह बात कही। उन्होंने उनकी कविता किराएदार को भी रेखांकित किया। डॉ. विकास दवे ने आगे कहा कि विक्रांत भट्ट की कविताओं में चाँद कई तरह से कई प्रतीक के रूप में आया है। चाँद जीवन में शीतलता और आस्वस्ति का प्रतीक भी बनकर आता है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कथाकार एवं वनमाली सृजन पीठ, भोपाल के अध्यक्ष श्री मुकेश वर्मा ने कहा कि दोनों कवियों की रचनाओं में दुःख और करुणा केंद्र में है, लेकिन दुःख और करुणा के साथ दोनों का ट्रीटमेंट अलग-अलग है। दोनों ही कवि अंतर्मुखी है और लगातार अपने आप से संवाद करते हैं, यह संवाद कविताओं के माध्यम से सीधे पाठकों तक संप्रेषित होता है।

वरिष्ठ कला समीक्षक एवं रंग संवाद के संपादक विनय उपाध्याय ने विक्रांत भट्ट की कविताओं पर टिप्पणी करते हुए कहा कि विक्रांत की कविताओं में अपनी मिट्टी की खुशबू तो है ही, साथ ही वह अपनी कविता के अंत में कुछ सूत्र वाक्य जरूर लेकर आते हैं। उनकी कविताओं में एक नाटकीय तत्व होता है। उन्होंने विक्रांत की कविता पितापन और डायरी के कुछ अंश भी पढ़ें।

युवा कवि-कथाकार मुदित श्रीवास्तव ने संजय सिंह राठौर की कविताओं को रेखांकित करते हुए कहा कि संजय सिंह राठौर की कविताओं का मुख्य स्वर प्रतिरोध है, जो उनके अपने जीवन संघर्ष से उपजा है। उनकी कविता में पास पड़ोस, परिवार, रिश्ते बड़ी संजीदगी के साथ आते हैं। श्री मुदित श्रीवास्तव ने इस अवसर पर संजय सिंह राठौर की कविता सुबह के लिए, एक दिन, अनायास ही नहीं के कुछ अंश भी पढ़ें।

संजय सिंह राठौर ने अपनी कविताओं बोनसाई, अपना शहर, मां और किताब, बरसाती नदियाँ आदि का पाठ किया। विक्रांत भट्ट ने अपनी कविताओं लिक्विड प्रेम, अब प्लूटो के बारे में नहीं पढ़ाया जाता, पहले से कहीं ज्यादा आगे आदि का पाठ किया।

कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य आईसेक्ट पब्लिकेशन की प्रबंधक एवं वनमाली सृजन पीठ की राष्ट्रीय संयोजक ज्योति रघुवंशी द्वारा दिया गया। आईसेक्ट पब्लिकेशन के वरिष्ठ प्रबंधक महीप निगम ने कार्यक्रम का प्रारंभिक संचालन किया और अंत में आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर आईसेक्ट समूह की महत्वपूर्ण पत्रिकाओं 'वनमाली कथा', 'रंग संवाद', 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' के ताजा अंकों का लोकार्पण भी अतिथियों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ आर.पी. दुबे ,कुल सचिव डॉ. संगीता जौहरी, टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र के निदेशक, डॉ. जवाहर कर्नावट, वरिष्ठ कवि एवं विश्व रंग परिवार के सदस्य श्री बलराम गुमास्ता, युवा कवि श्री मोहन सगोरिया, मानविकी एवं उदार कला संकाय की डीन डॉ. रुचि मिश्रा तिवारी, विभागाध्यक्ष डॉ. हर्षा शर्मा, विभागाध्यक्ष (हिंदी), डॉ. अरुण पांडेय, संस्कृत, प्राच्य भाषा एवं भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के संयोजक डॉ. संजय दुबे, डॉ. सावित्री सिंह परिहार, डॉ. उषा वैद्य आदि ने रचनात्मक भागीदारी की।

आप जैसा कोई: लैंगिक स्वायत्तता के मुद्दे पर सार्थक फिल्म

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

यह फिल्म इस एक सामाजिक रुढ़ि पर सवाल उठाती है और सिर्फ सवाल ही नहीं उठाती है वह औरत को अपनी सम्पति समझने वाले मर्दों की ईगो पर तगड़ा प्रहार भी करती है और वह अपने इस लक्ष्य में सफल भी रही है । अच्छी बात यह भी है कि इस फिल्म के माध्यम से इस मुद्दे पर बहस होगी । वैसे भी यदि मुद्दा सही हो तो बहस से कोई परहेज नहीं करना चाहिए । करण जौहर ने एक बार फिर इस फिल्म के जरिए एक अलग तरह का रोमांस दिखाया है और समाज के लिए एक ऐसी फिल्म बनाई है जो जरूरी है । आर माधवन और फातिमा सना शेख की यह अर्थपूर्ण और रोचक फिल्म नेटफ्लिक्स पर प्रदर्शित हुई है ।

फि लैंगिक स्वायत्तता पर खुली बहस को आमंत्रित करने वाली नेटफ्लिक्स पर रिलीज फिल्म - आप जैसा कोई एक रोचक और? विचारोत्तेजक फिल्म है। किसी भी निर्णय के मामले में महिलाओं की पुरुषों पर अतिशय निर्भरता की रुढ़ि के दरखिलाफ सवाल उठाने वाली और न सिर्फ सवाल उठाने बल्कि उसका समाधान सुझाने की चेष्टा करने वाली यह फिल्म नारी स्वातंत्र्य का परचम फहराने वालों को तो अच्छी लगेगी ही हर बात पर मैनू क्या कहने वाले बेफिक्र लोगों का भी ध्यान खींचेगी ।

यह फिल्म इस एक सामाजिक रुढ़ि पर सवाल उठाती है और सिर्फ सवाल ही नहीं उठाती है वह औरत को अपनी सम्पत्ति समझने वाले मर्दों की ईगो पर तगड़ा प्रहार भी करती है

और वह अपने इस लक्ष्य में सफल भी रही है । अच्छी बात यह भी है कि इस फिल्म के माध्यम से इस मुद्दे पर बहस होगी । वैसे भी यदि मुद्दा सही हो तो बहस से कोई परहेज नहीं करना चाहिए । करण जौहर ने एक बार फिर इस फिल्म के जरिए एक अलग तरह का रोमांस दिखाया है और समाज के लिए एक ऐसी फिल्म बनाई है जो जरूरी है । आर माधवन और फातिमा सना शेख की यह अर्थपूर्ण और रोचक फिल्म नेटफ्लिक्स पर प्रदर्शित हुई है ।

इस फिल्म को राधिका आनन्द और जेहान हाण्डा ने लिखा है और विकेक सोनी ने इसे निर्देशित किया है, और इन तीनों ने सौंपे गये काम को बड़ी जिम्मेदारी से पूरा किया है ।कथ्य की श्रेष्ठता को लेखन-निर्देशन के माध्यम से इतने प्रभावी तरीके से इन्होंने एक फिल्म में तब्दील किया है कि फिल्म विषय को तो सम्पुष्टि करती ही है दर्शको का भी अच्छा मनोरंजन करती है । फिल्म किसी भी प्रसंग अथवा दृष्य में ढीली नहीं पड़ती है । निर्देशन की कसावट पूरी फिल्म में आपको बाँधे रखती है, तारीफ करण जौहर की भी करनी होगी कि जो ऐसी कहानियाँ चुनकर उस पर ऐसी फिल्म बना रहे हैं जो समाज को कुछ संदेश देती है और सामाजिक सरोकार से जुड़ी होती हैं ।

फिल्म की केन्द्रीय भूमिका में संस्कृत शिक्षक श्रीरेणु की भूमिका में आर माधवन हैं तो उनके सामने उनकी खुले विचारों वाली पत्नी मधु बनीं हैं फातिमा फना शेख । शुरुआत में फिल्म में श्रीरेणु और मधु की मुलाकातें और बातें बहुत खुशनुमा लगती हैं। फिर फिल्म में टकराव की वजह सेक्स चैटिंग एप्स बनता है। वहीं से श्रीरेणु की संकुचित और मधु की बेबाकी और आधुनिक सोच में टकराव होता है। हालांकि यह टकराव तनावपूर्ण और दमदार नहीं लगता। श्रीरेणु यह बात तो सहजता से स्वीकार लेता है कि एक उम्र के बाद कोई लड़की वर्जिन नहीं हो सकती है, लेकिन एप पर लड़की का बिंदास अंदाज में बात करना उसे बर्दाश्त नहीं। इन दो विपरीत चरित्रों के निर्वाह में दोनो कलाकारों ने अभिनय तो अच्छा किया है और उनके बीच की फ्रेश केमिस्ट्री भी अच्छी लगती है ।फिल्म में चरित्र भूमिकाओं में मँझे हुए कलाकार हैं, जो इस कहानी को विश्वनीयता प्रदान करने में अहम् भूमिका निभाते हैं। नमित दास बीच-बीच में हास्य का तड़का लगाते हैं। पितृसत्तामक सोच को मनीष चौधरी ने बेहद सहजता से आत्मसात किया है। आयशा रजा अपनी भूमिका में पूरी तरह से प्रभावी हैं। हालांकि उनके किरदार के साथ लेखक न्याय नहीं कर पाए हैं।

यह फिल्म कुछ अहम मुद्दों को सार्थक तरीके से टुकड़ों में पेश करती है।

हालांकि पितृसत्तात्मक समाज की कठोर सच्चाई को तोड़ने का प्रभावी तरीका

नहीं बन पाती है फिर भी सकारात्मक दृष्टिकोण से बनी यह एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण फिल्म है ।

बच्चों के खातों में नहीं आई स्कूल ड्रेस की राशि, अधिकारी बोले, अपडेट की जा रही प्रोफाइल

पुरानी और रंग-बिरंगी ड्रेस पहनकर स्कूल पहुंच रहे बच्चे

संजय द्विवेदी, बैतूल। नवीन शैक्षणिक सत्र को शुरू हुए एक माह से अधिक समय हो चुका है, लेकिन सरकारी स्कूलों में पढने वाले विद्यार्थियों को गणवेश के लिए अभी तक राशि नहीं मिली है। कुछ बच्चे पुरानी ड्रेस तो कोई रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर स्कूल आ रहे हैं। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में यह स्थिति ज्यादातर देखी जा रही है। अब स्वतंत्रता दिवस को महज कुछ ही दिन शेष है, अगर जल्द ही बच्चों को ड्रेस उपलब्ध नहीं हुई तो बच्चों को कलर ड्रेस में ही स्वतंत्रता दिवस का पर्व मनाना पड़ेगा। दरअसल जिले के सरकारी स्कूलों में कक्षा 1 से 8वीं तक लगभग 117061 विद्यार्थी अध्ययनरत है। इन विद्यार्थियों को सरकार की तरफ से निशुल्क पुस्तकों के साथ-साथ स्कूल ड्रेस भी दी जाती है। लेकिन इस वर्ष कितने बच्चों को ड्रेस के लिए राशि दी जाना है, यह जानकारी तक जिला शिक्षा केंद्र के पास मौजूद नहीं है। उनका कहना है कि राज्य शिक्षा केंद्र का पोर्टल अपडेट होने से बीईओ स्तर पर जानकारी अपडेट हो रही हैं। इसलिए आंकड़े मिलना पाना फिलहाल संभव नहीं है।

हर साल ड्रेस वितरण में बदलाव – सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को निःशुल्क ड्रेस वितरण की प्रक्रिया में हर साल बदलाव किया जाता है। इस बार प्रक्रिया में पुनः परिवर्तन किया गया है। अब बच्चों को दो ड्रेस का कपड़ा खरीदने 600 रुपए के हिसाब से राशि बैंक खाते में दी जाएगी, जिससे बच्चे स्वयं अपने नाप की ड्रेस खरीद सकें। पहले स्व सहायता समूहों द्वारा सिलाई कर छात्रों के लिए जो ड्रेस दी जाती थीं, उनमें साइज की परेशानी आती थी। अधिकारियों का कहना है कि स्कूल ड्रेस के लिए जो भी जरूरी प्रक्रिया है, पूर्ण की जा रही है। जिसके बाद बच्चों के खातों में राशि आएगी और कब तक मिलेगी, लेकिन राशि कब तक आयेगी, यह अधिकारी भी नहीं बता पा रहे है। ऐसे में अभिभावकों में ड्रेस को लेकर असमंजस हैं।

बैंक खातों के अपडेशन का चल रहा काम – शिक्षा विभाग के मुताबिक ड्रेस की राशि देने बच्चों के बैंक अकाउंट का पोर्टल पर सत्यापन कर अपडेशन किया जा रहा है, पोर्टल की रफ्तार सुस्त है, जिससे काम में देरी हो रही है। विभाग का कहना है कि एजुकेशन पोर्टल 3.0 लांच होने के कारण बीईओ स्तर पर ही लॉगिंग हो रही हैं। इस वजह से सभी बीईओ से डाटा एकत्रित किए जाने के बाद ही सही स्थिति बता पाएंगे। वैसे हर साल एक से सवा लाख बच्चों को गणवेश का वितरण किया जाता है, लेकिन जिस तरह की स्थिति बनी हुई है, उसे देखकर लगता नहीं कि इस महीने ड्रेस की राशि छात्रों के खातों में डल पाएगी।

8वीं तक के विद्यार्थियों को मिलती है निशुल्क ड्रेस – सरकारी स्कूलों में पढने वाले बच्चों को शासन की तरफ से निशुल्क स्कूल ड्रेस प्रदान की जाती है। यह सुविधा सिर्फ सरकारी स्कूल में है। लेकिन सरकारी स्कूलों में ड्रेस को लेकर अभी तक सिर्फ डाटा एकत्रित करने का काम चल रहा है। पालकों ने बताया कि ड्रेस को लेकर शिक्षक भी कुछ नहीं बता पा रहे है। जिसके कारण बच्चों को पुरानी स्कूल ड्रेस या रंग-बिरंगी ड्रेस पहनाकर स्कूल भेज रहे है। कई बच्चों की यूनिफार्म खराब हो गई है। यूनिफार्म खराब होने से बच्चे कलर ड्रेस में स्कूल पहुंच रहे है। यदि बच्चों को स्कूल ड्रेस की राशि जल्द नहीं मिली तो बच्चे इन्हीं ड्रेस पर पूरा साल निकाल देगे।

बच्चों को ड्रेस का इंतजार, असमंजस में अभिभावक

स्कूल खुलते ही बच्चों को सबसे ज्यादा नई किताबें और ड्रेस का इंजतार होता है। यही लालच उन्हें स्कूल जाने और पढ़ाई करने के लिए उत्साहित भी करता है। अप्रैल में सत्र शुरू हुआ था, तब बच्चों से बच्चे बिना ड्रेस के स्कूल पहुंच रहे है, लेकिन जून और जुलाई आ गया, सरकारी स्कूल के बच्चों का इंतजार खत्म ही नहीं हो रहा। इधर अभिभावकों का कहना है कि स्कूल से ड्रेस या ड्रेस के लिए राशि मिलती है। इसलिए उन्होंने ड्रेस नहीं सिलवाई। अगर ड्रेस बनवा भी लेते है और स्कूल से भी ड्रेस ही मिलती है तो बच्चों के पास अतिरिक्त ड्रेस हो जायेगी और पालक भी को नुकसान होगा, इसलिए अभी जैसे तैसे पुरानी ड्रेस और कलर कपड़ों पर ही काम चला रहे है।

इनका कहना है –

जैसे ही पोर्टल में नामांकन के वेरिफिकेशन का कार्य पूर्ण होगा, बच्चों के खातों में राशि आ जायेगी। इसमें खास बात यह है कि पिछली बार स्वसहायता समूह द्वारा ड्रेस बांटी थी। इस बार बच्चों को खाते में ड्रेस की राशि मिलेगी।

– भूपेंद्र सिंह वरकड़े, डीपीसी, जिला शिक्षा केंद्र बैतूल

मां नर्मदा के पूजन से धुआंधार कावड़ यात्रा की शुरुआत हुई

मां नर्मदा को 101 फीट की चुनरी उड़ा कर किया दुग्धाभिषेक

धार। श्रावण माह में हर और भक्ति भाव से कावड़ यात्रा निकल रही है। इसी कड़ी में मां नर्मदा के पूजन से धार की प्रसिद्ध धुआंधार कावड़ यात्रा की शुरुआत हुई । मां नर्मदा को 101 फीट की चुनरी उड़ा कर एवं दुग्धाभिषेक कर इस भव्य कावड़ यात्रा का शुभारंभ हुआ।

प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी धुआंधार कावड़ यात्रा अपने 23 वे वर्ष में माँ नर्मदा के पावन तट पर बसी महेश्वर नगरी से बाबा धारनाथ की नगरी धार के लिए निकली। सोमवार की पावन बेला पर मां नर्मदा के पावन जल से बाबा धारनाथ का अभिषेक किया जाएगा।

इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता समंदर सिंह पटेल, सर्व ब्राह्मण समाज के कार्यकारी जिला अध्यक्ष समाजसेवी धर्मेंद्र जोशी, यात्रा संयोजक सूर्या दुबे ,महेश बाबा ,अशोक शास्त्री, राजेश शर्मा ,गेंदालाल बवनका मनीष महाजन, दीपक शर्मा, लालू यादव , लक्की उस्ताद, यात्रा के मार्गदर्शक राजू गुरु ,दादू गुरु एवं युवा मोर्चा के साथी महामंत्री अंकित भावसार , चेतन शर्मा, मनोज सोहेल प्रेम परमार , देवांश रेवटियो , गौरव पाल सहित सैकड़ों शिवभक्त सम्मिलित हुए।

अमरावती जबलपुर एक्सप्रेस का हो मुलताई में स्टॉपेज

स्टेशन की समस्याओं को लेकर ग्राहक पंचायत ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल/मुलताई। अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत की मुलताई शाखा ने मध्य रेलवे डीआरएम नागपुर के नाम ज्ञापन स्टेशन मास्टर मुलताई को सौपा। जिसमें पवित्र नगरी स्टेशन पर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने एवं रेलो के स्टॉपेज की मांग की है। सौपे गए ज्ञापन में बताया गया है कि ताप्ती उद्गम स्थल होने के कारण मध्य प्रदेश शासन द्वारा इसे पवित्र धार्मिक नगरी घोषित किया गया है। प्रदेश के प्रमुख धार्मिक नगरों में शामिल होने के बावजूद मुलताई स्टेशन पर ना तो

यात्रियों को मूलभूत सुविधाएं प्राप्त है और ना ही यहां ट्रेनों का स्टॉपेज है। ज्ञापन में मांग की गई है कि पवित्र नगरी स्टेशन पर शुद्ध पेयजल व शौचालय की उचित व्यवस्था की जाए। स्टेशन पर सुविधाजनक शौचालय एवं पेयजल की व्यवस्था न होने के कारण यात्रियों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत ने 12159 अमरावती जबलपुर एक्सप्रेस का स्टापेज तथा 22112 दादाधाम एक्सप्रेस पुनः प्रारम्भ करने की मांग की है। जिससे यात्रीयों को व्यापार हेतु व श्रदालुओ को दर्शन करने जाने की सुगमता होगी।।यात्रिओ को स्टेशन परिसर में उचित सुविधाएं मिलना चाहिए जो उनका अधिकार है तथा बुकिंग टिकिट काउंटर भी बढाने की मांग की गई है। ग्राहक पंचायत ने बताया कि रेलवे की समस्याओं को लेकर इसके पूर्व में भी मांग पत्र दिया जा चुका है, यदि अब उक्त विषय पर कार्यवाही नही की जाती है तो उच्च पदाधिकारी से चर्चा के बाद आंदोलन की रूपरेखा बनाई जाएगी । ज्ञापन सौंपने वालों में मुलताई तहसील के ललित महतकर जिला उपाध्यक्ष, कृष्णा धोटे तहसील प्रमुख, मनोज उइके अध्यक्ष, राजेश्वर बुआडे व अशोक पवार उपाध्यक्ष ,सचिव विष्णु पवांर व दीपक देशमुख कोषाध्यक्ष राकेश भुजाडे व रोशन बालापूरे उपस्थित थे।

शालेय बास्केटबॉल प्रतियोगिता संपन्न

100 से अधिक बालक बालिकाओं ने लिया भाग

बैतूल/मुलताई। विकासखण्ड स्तरीय शालेय बास्केट बॉल प्रतियोगिता बसंत इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल मूलताई में संपन्न हुई । इस प्रतियोगिता में 14,17,19 आयु वर्ग के 100 से अधिक बालक बालिकाओं ने भाग लिया। विकासखंड खेल अधिकारी महेश खत्री ने बताया की शासन के निदेशानुसार उच्च कार्यलय से प्राप्त खेल पंचाग के अनुसार विभिन्न प्रतियोगिता आयोजन हेतु समय अवधि की कमी के कारण प्रतिदिन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। बास्केटबॉल प्रतियोगिता के आरंभ के अवसर पर बसंत स्कूल के प्राचार्य ने कहा कि पढ़ाई के साथ साथ खेल भी अनिवार्य है उन्होंने कहा

की स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। यह देखने मे आया है की जो बच्चे खेल कुद मे भाग लेते है वे अधिक साहसी ऊर्जावान और एक्टिव होते है। आज प्रतियोगिता मे भारत विकास परिषद के जिला समन्वय राजीव जैन, सुमित पंजाबी, मितेन्द्र खंडेलवाल ने भारत विकास परिषद के उद्देश्य को समझाया इसी क्रम मे आज वी आई पी स्कूल मे खेल शिक्षक अमित कुमार के नेतृत्व मे संदीपनि स्कूल मुलताई, वी आई पी मुलताई, कोरोला पब्लिक स्कूल, शा. नवीन स्कूल मुलताई, सनराइज पब्लिक स्कूल, न्यू कॉर्मल स्कूल मुलताई के 100 से अधिक खिलाडियों ने भाग लिया।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

बैतूल। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन 19 जुलाई को किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कृषकों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जागरूक करना एवं प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की जानकारियां प्रदान करना था। कार्यशाला में कृषकों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जानकारी प्रदान की गई। एसबीआई जनरल इंश्योरेंस कंपनी के जोनल मैनेजर त्रंबकेश्वर तिवारी ने बताया कि खरीफ मौसम में अधिसूचित फसलों का बीमा प्रारंभ हो चुका है। कृषकों द्वारा दिए गए प्रीमियम राशि सोयाबीन फसल के लिए 840 रुपए, मक्का फसल के लिए 722 रुपए, धान सिंचित फसल के लिए 814 रुपए, धान असिंचित फसल के लिए 651 रुपए, अरहर फसल के लिए 735 रुपए प्रति हेक्टेयर देय है। फसल बीमा करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीमा करने के लिए इच्छुक अऋणी कृषक अपनी निकटतम बैंक शाखा सरकारी समिति अधिकृत चैनल एवं जन सेवा केंद्र एवं कृषक स्वयं भी

राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर योजना से जुड़ सकते हैं। कृषकों को फसल बीमा करवाने के लिए आवश्यक दस्तावेज बैंक पासबुक, फसल बुवाई प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बही एवं बटाईदार किसान या किराए पर ली गई भूमि के लिए भूमि मालिक द्वारा शपथ पत्र प्रस्तुत किया जाना अनिवार्य है। जिले के किसानों से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में जुड़कर योजना का लाभ उठाने का अनुरोध किया है।

इस अवसर पर जिला पंचायत कृषि स्थाई समिति अध्यक्ष शैलेंद्र कुंभारे, विकासखंड कृषि स्थाई समिति अध्यक्ष माधवरा मनकर, भारती किसान संघ अध्यक्ष प्रतिनिधि दीपक कपूर, किसान मोर्चा अध्यक्ष महेश्वर सिंह चंदेल, प्रांतीय सदस्य किसान संघ पुरुषोत्तम सरले, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट राजीव रंजन श्रीवास्तव, उपसंचालक कृषि आनंद कुमार बडोनिया, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ.आर डी बारपेटे एवं कृषि विभाग के समस्त अनुविभागीय कृषि अधिकारी, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी एवं क्षेत्रीय कृषि विस्तार अधिकारी, एसबीआई जनरल इंश्योरेंस से जोनल मैनेजर त्रंबकेश्वर तिवारी, जिला प्रबंधक राकेश कुमार बेरवा एवं तहसील स्थलीय एसबीआई जनरल इंश्योरेंस की टीम उपस्थित थी।

बहु प्रतीक्षित संयुक्त तहसील भवन का भूमि पूजन आज

कार्यक्रम की व्यवस्था में जुटा राजस्व विभाग का पूरा अमला

बैतूल। जिला मुख्यालय में 640.27 लाख रुपये की लागत से बनाए गए नवनिर्मित संयुक्त तहसील भवन का भूमिपूजन आज 20 जुलाई रविवार को होने जा रहा है। केंद्रीय मंत्री जनजातीय कार्य दुर्गादास उईके की अध्यक्षता और प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक बैतूल हेमंत खंडेलवाल के विशिष्ट आतिथ्य में लोकार्पण कार्यक्रम शुभारंभ प्रातः 10 बजे से किया जाएगा। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष राज्यमंत्री दर्जा मोहन नागर, नगर पालिका अध्यक्ष बैतूल श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, जिला योजना समिति के सदस्य सुधाकर पवार की गरिमामय उपस्थिति रहेगी।

यह भवन जिले की प्रशासनिक दक्षता और राजस्व सेवाओं को एक ही छत के नीचे लाकर सुगम बनाने का एक ऐतिहासिक कदम होगा। इस भूमि पूजन कार्यक्रम की समस्त तैयारियों की स्वयं कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार

समीक्षा की गई। कार्यक्रम को भव्य और व्यवस्थित बनाने हेतु राजस्व विभाग का पूरा अमला तैयारियों में जुटा हुआ है। एसडीएम मकसूद अहमद, तहसीलदार गोवर्धन पाटे, नायब तहसीलदार श्याम सिंह उइके तथा पूनम साहू के नेतृत्व में नगर और ग्रामीण क्षेत्र के सभी पटवारी एवं राजस्व निरीक्षकों ने तैयारी को अंतिम रूप दे दिया है। जिन अधिकारियों की सक्रिय भूमिका रही, उनमें राजस्व निरीक्षक नगर भीमराव पोटफोडे, डायवर्सन निरीक्षक राहुल इवने, यशवंत वटके, संतोष ठाकुर, हेमंत चिलहाटे, धनराज झल्लारे, भगवानदास आर्मो, जितेंद्र पंवार, नजूल निरीक्षक सुखराम सिरसाम, राजेश धाड़से प्रमुख हैं। पटवारी संघ जिला अध्यक्ष अवधेश वर्मा, पटवारी सर्व ग्रामीण, और पटवारी सर्व नगर बैतूल के सहयोग से कार्यक्रम स्थल पर समस्त व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं।

करोड़ों के विकास कार्यों का भूमि पूजन आज

इंदिरा और जवाहर वार्ड में सीसी रोड, नाली, स्वागत द्वार व स्ट्रीट लाइटिंग कार्य की होगी शुरुआत

बैतूल। नगर पालिका क्षेत्र में लंबे समय से प्रतीक्षित विकास कार्य अब मूर्त रूप लेने जा रहे हैं। इंदिरा वार्ड और जवाहर वार्ड गंज में करोड़ों की लागत से बनने वाले सीसी रोड, नाली, पाथवे, स्वागत द्वार और स्ट्रीट लाइटिंग जैसे कार्यों का भूमि पूजन आज रविवार 20 जुलाई को मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री जनजाति कार्य विभाग दुर्गादास उइके, विधायक एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की उपस्थिति में होगा। ये विकास कार्य वार्डों की सूरत बदलेंगे। साथ ही क्षेत्रवासियों को वर्षों से चली आ रही मूलभूत समस्याओं से भी राहत दिलाएंगे।

भूमिपूजन कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 9 बजे सतपाल आश्रम इटारसी रोड से होगी, जहां इंदिरा वार्ड के प्रेम पान से सतपाल आश्रम तक 48.75 लाख की लागत से सीसी रोड निर्माण कार्य, प्रेम पान से सतपाल आश्रम तक 38.81 लाख की लागत से ह्यूम पाइप नाली निर्माण कार्य और सतपाल आश्रम रोड के पास स्वागत द्वार निर्माण कार्य (4.94 लाख) का भूमि पूजन किया जाएगा।

इसी दिन दोपहर 11 बजे गंज क्षेत्र के जवाहर वार्ड के महाकाल चौक से एचडीएफसी बैंक तक सीसी रोड, आरसीसी नाली, डिवाइडर पाथवे और स्ट्रीट लाइटिंग कार्य का भूमि पूजन होगा। यह कार्य 188.12 लाख रुपए की लागत से स्वीकृत है, जो कि कायाकल्प 2.0 योजना के अंतर्गत कराया जा रहा है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला योजना समिति सदस्य सुधाकर पंवार, नगरपालिका परिषद बैतूल की अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बारस्कर एवं नगरपालिका उपाध्यक्ष महेश राठौर, जवाहर वार्ड के पार्षद एवं सभापति लोक निर्माण विकास प्रधान, यातायात सभापति एवं इंदिरा वार्ड के पार्षद रघुनाथ लोखंडे, अन्य पार्षदगण, सीएमओ नगर पालिका और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहेंगे।

भूमिपूजन से खुलेंगे विकास के द्वार

जवाहर वार्ड गंज और इंदिरा वार्ड में जिन निर्माण कार्यों का भूमि पूजन किया जा रहा है, वे आने वाले समय में क्षेत्र की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में मील का पत्थर साबित होंगे। सीसी रोड के निर्माण से आमजन को सुविधा मिलेगी, जबकि आरसीसी नालियों से जल निकासी की व्यवस्था बेहतर होगी और बारिश में जलभराव की समस्या नहीं रहेगी। डिवाइडर पाथवे से यातायात व्यवस्थित होगा। वहीं, स्ट्रीट लाइटिंग से रात्रिकालीन सुरक्षा और आवागमन सुगम होगा। सतपाल आश्रम के पास बनने वाला स्वागत द्वार क्षेत्र की पहचान को मजबूत करेगा और शहर में आने वालों के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगा।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने किया रक्तक्रांति एल्बम का विमोचन, 5000 रक्तदाताओं की प्रेरक झलक

तीन भाषाओं में बना गीत करेगा मध्यप्रदेश–महाराष्ट्र में रक्तदान के लिए जागरूक

बैतूल। मां शारदा सहायता समिति द्वारा 5 हजार से ज्यादा रक्तदाताओं की प्रेरणादायक यात्रा और जनजातीय संस्कृति के जरिए देशभर को रक्तदान का संदेश देने के लिए ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में रक्तक्रांति एलबम तैयार किया है। इस रक्तक्रांति एलबम का विमोचन भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के द्वारा किया गया। इस एलबम के माध्यम से हिंदी, गोंडी और मराठी तीनों भाषाओं में आम जन को रक्तदान के लिए प्रेरित किया गया है। संस्था के संजय शुक्ला, शैलेंद्र बिहारिया और महेंद्र मालवी ने जानकारी दी कि यह गीत रक्तदान की आवश्यकता को समझाने का जीवंत प्रयास है। विमोचन समारोह में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री और जिले के प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, विधायक डॉक्टर योगेश पंडाग्रे, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, अतीत पवार और विकास मिश्रा प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

मंच पर समिति की अध्यक्ष पिंकी भाटिया, कार्यकारी अध्यक्ष हिमांशु सोनी और संरक्षक मुकेश गुप्ता ने बताया कि इस वीडियो गीत को पूरे देश में रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

जनजातीय नृत्य की भी दिखी झलक– इस एलबम में 5000 से अधिक रक्तदाताओं को एक समान वेशभूषा में दिखाया गया है, जो रक्तदान के लिए जनसमूह को प्रेरित करते नजर आते हैं। इस प्रस्तुति की विशेषता यह रही कि इसमें जनजातीय नृत्य की भी झलक दिखाई गई है, जो स्थानीय संस्कृति को जोड़ते हुए रक्तदान के संदेश को अधिक प्रभावी बनाता है। मौके पर पंजाबराव गायकवाड, चंचल पांसे, सचिन रॉय, राजेश मदान, अनंत तिवारी, कृष्ण चौधरी, जगदीश किरोदे, नितिन अग्रवाल, राजू मालवीय, सागर बिंझाड़े, दीप मालवी, निमिष मालवीय, हेमासिंह चौहान, सुषमा सोनी, प्रियंका सोनी, कृष्णा खातरकर, सरिता राठौर, जितेंद्र माहेश्वरी, इंदी अहलूवालिया, कोजेम भाई, मोईज फकरी, नीलम दुबे और आशीष यादव सहित समिति के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे।

रेड डोनेशन डॉक्यूमेंट्री फिल्म का भी किया निर्माण

रक्तक्रांति एलबम में बैतूल जिले की समस्त रक्तदान समितियों के साथ वर्तमान और पूर्व जनप्रतिनिधियों को भी इस आंदोलन से जोड़ते हुए दिखाया गया है। गीत में रेड वेशभूषा का उपयोग एकता और संकल्प का प्रतीक बनकर उभरा है। समिति ने पहले भी रक्तक्रांति, जीवन रक्त और ब्लड डायरी - एक नई जिंदगी जैसी किताबें प्रकाशित कर रक्तदान के प्रति समाज को जागरूक किया है। इसके साथ ही समिति द्वारा रेड डोनेशन नामक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का भी निर्माण किया गया है, जिसमें थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों की पीड़ा को उजागर कर रक्तदान की महत्ता को बताया गया है। तख्तियों और झांकियों के माध्यम से भी आम जनता को रक्तदान के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम के अंत में समिति के दीपू सलूजा, धीरज हिरानी और संतोष पवार ने इस जागरूकता गीत को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की अपील की।

मदन मोहन : स्मृति शेष

तुम से बिछड़कर चैन कहां हम पाएंगे

अपने आप में मदन मोहन विलक्षण संगीतकार थे, जिन्होंने अपने जीवनकाल में बहुत कम धुनें बनाई। पर, जो भी संगीत रचा, वो आज भी सुना जाता है। 14 जुलाई 1975 को उनका निधन हो गया था। लेकिन, आज 50 साल बाद भी पुराने गाने पसंद करने वालों के दिल में मदन मोहन की जगह बरक़रार है। इस संगीतकार का पूरा नाम मदन मोहन कोहली था। युवावस्था में वे सेना में थे। बाद में संगीत के प्रति अपने झुकाव के कारण ऑल इंडिया रेडियो से जुड़ गए।

रविराज प्रणामी

मदन मोहन का मतलब है 'डबल एम' यानी जहां संगीत, मौसिक़ी और म्यूजिक को दोहरी प्रतिध्वनि मिलती है। जहां संगीत अपने अस्तित्व पर इतराने लगता है। जहाँ संगीत ये कहने लगता है कि आओ और मेरी जद से निकलकर दिखाओ! आओ और मदनमोहन के बनाए इस तिलिस्म में ही कैद हो जाओ। आओ और सुनो, जो तुम मिल गए हो तो ये जहां मिल गया! कितना सीधा सरल है ये फलसफा और भटक रहे हैं सभी! वे कम जिए, पर अपने चाहने वालों के लिए अपने आप में जिंदगी का सार बना गए।

'मदन मोहन से मिलने के लिए मैं दुनिया के किसी भी कोने में आ सकता हूं!' ये वाक्य मदन मोहन का कोई मुरीद ही समझ सकता है और एक मदन मोहन मुरीद ही कह भी सकता है। कहा मदन मोहन के रचे संगीत संसार में आकंठ डूबे अभिन्न मित्र सुबोध होल्कर ने और कान थे खुद रविराज प्रणामी के, जो दुनिया के सभी मदन मोहन भक्तों की तरह समझता है कि मदनमोहन सिर्फ उसके हैं! फिर छिड़ी होती हैं उनके यानी रूहानी संगीत के भगवान की सांगीतिक कल्पना की वे जिरह कि रो उठता है जी! कहीं न कहीं इस ईश्वरीय धन्यवाद के साथ कि मदन मोहन को समझने का, उन्हें जानने का और उन पर दो बातें रखने का शऊर दिया।

हर संगीतकार नायाब है। हर एक का अपना अंदाज़ और अपना सुरमयी आनंद है, लेकिन, मदन मोहन सबसे अलग थे। किसी के कहने या समझाने से वे मदन मोहन नहीं हुए। जो मदन मोहन को समझता है, सिर्फ वही समझ सकता है कि इस संगीतकार की जिंदगी में क्या कैफ़ियत है। मदन मोहन को जानने के लिए ज़हीन संगीतमय मस्तिष्क के साथ इस दुनिया में अवतरित होना होता है, वरना तो मदन मोहन के करीबी भी उन्हें नहीं जान और समझ सके!

कोई 51 बरस खुद के लिए न जीकर आपकी रूह को आंदोलित करने के लिए जीवन निसार दे, उसमें और एक पैग़ंबरी फ़रिश्ते में क्या फर्क है! मदन मोहन की कशिश आपकी हमारी बनाई हुई है। हम उनकी तस्वीर को ही घंटों देखते रहते हैं और अफसोस मनाते रहते हैं कि ये महान व्यक्तित्व आज क्यों नहीं है! अगर वे आज होते, तो सौ के पार होते। पर, मदन मोहनी दिल चाहता है कि वे होते। 50 बरस हो गए, उन्हें ये दुनिया ये महफिल छोड़े, पर लगता है कि ये सभी उनकी रचनाएं कल की ही हैं, अभी ही बनी हैं। 'लग जा गले' सुनकर कहां लगता है कि ये 62 साल पहले रिकॉर्ड हुआ गीत है। आज भी हम उसे एक सी शिद्दत के साथ दिल से लगाए हुए हैं।

तलत महमूद तथा लता मंगेशकर से उन्होंने कई यादगार गजलें गंवाई। जिनमें आपकी नजरों ने समझा (अनपढ़ 1962), अगर मुझसे मोहब्बत है जैसी रचनाएं शामिल हैं। उनके मनपसंद गायक मोहम्मद रफ़ी थे। जब ऋषि कपूर और रंजीता की फिल्म 'लैला मजनू' बन रही थी, तो गायक के रूप में किशोर कुमार का नाम आया, परंतु मदन मोहन ने साफ कह दिया कि पर्दे पर मजनू की आवाज़ तो रफ़ी साहब की ही होगी और अपने पसंदीदा गायक मोहम्मद रफी से ही गवाया गया। 'लैला मजनू' बहुत बड़ी म्यूजिकल हिट साबित हुई। साथ ही रफी साहब अभिनेता ऋषि कपूर की आवाज बन गए।

ये भी अजूबा बात है कि उनके निधन के बरसों बाद 2004 में यश चोपड़ा की फिल्म 'वीर ज़ारा' में उनकी अप्रयुक्त धुनों का इस्तेमाल किया गया। उनकी धुनों के लिए गीत जावेद अख्तर ने गीत लिखे। कालजयी गीत देने वाले इस बेहद गुणी संगीतकार मदन मोहन का निधन 51 वर्ष की अल्पायु में हुआ! बड़ी फिल्में न मिलने या बड़ा अवॉर्ड न मिलने की टीस जन्म देती रही, 'ये दुनिया ये महफिल मेरे काम की नहीं' जैसे मील के पत्थर गीतों पर श्रोता वृंद के लिए उनकी दुनिया उनकी महफिल सिर्फ काम की ही नहीं, जीवन सार्थक भरी हो गई। नियति देखिए जिन विलक्षण मदन मोहन से अवार्ड दूर रहे आज उन्हीं के गीतों को गाकर नई पीढ़ी अवॉर्ड पाती है। 'तुम क्या जानो तुम क्या हो' और 'तुम से बिछड़कर चैन कहां हम पाएंगे' जैसे गीतों की तलाश बनी हुई है! दास्तान आपकी सुनकर, रो हम रहे हैं और आप पूछ रहे हैं 'आप क्यों रोए!' जब लगता है कि मुश्किल है जीना बेदर्दों की दुनिया में तो 'दिल ढूंढता है फिर वही फुर्सत के रात दिन' और 'बहाने जो हम से दूर जाने के लिए बना लिए!' वो शख्स संगीत क्या जाने, जो आपकी कदर जाने ना। बेताब दिल की तमन्ना यही है, तुम्हें चाहेंगे तुम्हें पूजेंगे तुम्हें अपना खुदा बनाएंगे! आज 50 साल हो गए, कल 100 भी गुज़र जाएंगे और हम आपको लेकर आपकी बातें करते हुए कहते रहेंगे 'इजाज़त हो तो सुना दूं!'

अमिताभ बच्चन हैं टीवी के सबसे महंगे होस्ट

सोनी टीवी पर प्रसारित होने वाला शो 'कौन बनेगा करोड़पति' का 17वां सीजन जल्दी ही आने वाला है। इस शो को लोगों का बेसब्री से इंतजार रहता है। दूसरी तरफ बिग बॉस का 19 सीजन भी जल्दी ही आएगा। जहां केबीसी को अमिताभ बच्चन होस्ट करते हैं वहीं सलमान खान बिग बॉस के होस्ट हैं। दोनों ही शो दर्शकों को बेहद पसंद आते हैं। इस बार अमिताभ बच्चन ने इस शो को बढ़ती उम्र के कारण नहीं करना चाहते थे। लेकिन, अब वो इस शो को होस्ट कर रहें हैं। अमिताभ ने इस शो को होस्ट करने के लिए एक बड़ा अमाउंट लिया है। अमिताभ के एक एपिसोड की कीमत जानकर आपके होश उड़ जाएंगे। फीस के मामले में अब बिग बी ने सलमान खान को भी पीछे छोड़ दिया है।

'कौन बनेगा करोड़पति' आज से नहीं बल्कि कई सालों से चलता आ रहा है। इस शो

का अब 17वां सीजन भी स्ट्रीम होने जा रहा है। अमिताभ बच्चन ने साल 2000 से ही इसके होस्ट करते आए हैं। उन्होंने सिर्फ तीसरा सीजन होस्ट नहीं किया था। इस सीजन को शाहरुख खान ने होस्ट किया था। कुछ दिनों पहले तक यह बताया जा रहा था कि अमिताभ इस सीजन को होस्ट नहीं करेंगे। रिपोर्ट्स में बताया जा रहा था कि बढ़ती उम्र के कारण बिग बी ने यह फैसला लिया है। लेकिन, अब अमिताभ बच्चन इसका 17वां सीजन होस्ट करने जा रहे हैं। शो के लिए बिग बी ने बड़ी फीस ली है। बिग बी अब टीवी के सबसे महंगे होस्ट बन गए। उन्होंने सलमान खान को भी पीछे छोड़ दिया है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, 'कौन बनेगा करोड़पति' के सीजन 17 के एक एपिसोड के लिए अमिताभ बच्चन 5 करोड़ रुपए ले रहे हैं। ये हफ्ते से 5 दिन आता है. तो एक हफ्ते के 25 करोड़ रुपए अमिताभ बच्चन ले रहे हैं। इतनी बड़ी अमाउंट के साथ बिग बी भारत के सबसे महंगे होस्ट बन गए। वहीं सलमान खान की बात करें तो बिग बॉस ओटीटी-2 के लिए इन्होंने एक एपिसोड के लिए 12 करोड़ चार्ज किया था। सलमान हफ्ते में 2 दिन शूट करते हैं इस वजह से ये अमाउंट 24 करोड़ है। 'कौन बनेगा करोड़पति' का प्रोमो भी आ चुका है. यह शो 11 अगस्त से शुरू शुरू होने वाला है।

रियल बॉक्स

बदले क्लाइमैक्स के साथ 'शोले' फिर परदे पर

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्म इतिहास में 'शोले' ऐसी फिल्म है, जिसे बीते पचास साल से लेकर आजतक हर वर्ग के दर्शक ने सराहा। इस कालजयी फिल्म को 'फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन' के सहयोग से नया अवतार मिला है। इसे इटली के विशाल प्लाजा पियाजा मैगिओर सिनेमाघर में प्रदर्शित किया गया। जिस तरह इस फिल्म को प्रतिसाद मिला, उससे यह उम्मीद जागी कि अनकट दृश्यों और मूल अंत के साथ 'शोले' भारतीय दर्शकों को भी देखने को मिलेगी। पचास साल पहले जब 'शोले' प्रदर्शित हुई, तब फिल्म के मूल अंत में पूर्व पुलिस अधिकारी ठाकुर बलदेव सिंह गब्बर सिंह को अपने स्पाइक वाले जूतों से मारकर अपना बदला लेते हुए दिखाया गया था। तब सेंसर बोर्ड इस अंत से खुश नहीं था। वह चाहता था कि फिल्म का अंत बदला जाए। बोर्ड के सदस्यों की राय थी कि फिल्म में बहुत अधिक हिंसा है। इसलिए निर्देशक रमेश सिप्पी ने अंत को फिर से शूट किया, जिसमें ठाकुर द्वारा पीटे जाने के बाद गब्बर को पुलिस गिरफ्तार कर लेती है।

इसे पुराने अंत के साथ फिर से प्रदर्शित करना आसान नहीं था। क्योंकि, इन पचास सालों में 'शोले' की निगेटिव पूरी तरह से खराब हो चुकी थी। इसकी रीलें आपस में चिपक चुकी थी। जिसे नया रूप देने के लिए फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन आगे आई और रमेश सिप्पी ने इसके लिए वित्तीय सहायता की। तीन साल की अथक मेहनत के बाद इसे फॉर-के तकनीक और डॉल्बी साउंड सिस्टम के साथ नए अवतार में तैयार किया गया। जब शुक्रवार को विश्व प्रीमियर वार्षिक इल सिनेमा रिट्रोवाटो फेस्टिवल के दौरान इटली के बोलोग्ना में एक विशाल प्लाजा पियाजा मैगिओर में एक बड़े ओपन एयर थियेटर वाली स्क्रीन पर 'शोले' को उसके मूल अंत के साथ दिखाया गया तो इसे भरपूर तारीफ मिली। इसके बाद फिल्म को भारत में भी प्रदर्शित करने का विचार करने किया गया।अब समझा जा रहा है कि 50 साल पूरा होने पर इसे 15 अगस्त को रिलीज किया जाएगा। सलीम-जावेद की जोड़ी की लिखी यह फिल्म 204 मिनट लंबी है। इसमें सितारों की लम्बी चौड़ी फौज है, जिनमें संजीव कुमार, हेमा मालिनी, जया भादुड़ी, अमजद खान, हेलेन, सचिन, एके हंगल, विजू खोटे, मैक मोहन, सहित कई कलाकार शामिल है। फिल्म के लिए हैदराबाद के नजदीक पूरा एक गांव रामगढ़ बसाया गया था जो आज भी अस्तित्व में है। फिल्म का संगीत आरडी बर्मन ने तैयार किया था और इसे 70 एमएम और स्टीरियोफोनिक साउंड में फिल्माया गया था।

जहां तक शोले के रेस्टोरेशन का सवाल है, तीन साल पहले 'शोले' का निर्माण करने वाली सिप्पी फिल्म्स के शहजाद सिप्पी ने इसके रेस्टोरेशन के लिए फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन से संपर्क किया था। वह मुंबई के एक गोदाम में रखे गए फिल्म के कुछ अंशों के बचाने यह काम करवाना चाहते थे। सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि फिल्म के डिब्बों से लेबल गायब थे। लेकिन, सामग्री की जांच करने पर, फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन को पता चला कि उनमें मूल 35 मिमी कैमरा और साउंड निगेटिव थे। शहजाद ने फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन को ब्रिटेन के एक स्टोरेज में संरक्षित फिल्म के कुछ एडिशनल कंटेंट्स के बारे में भी जानकारी दी। ब्रिटिश फिल्म संस्थान की मदद से एफएचएफ को इन सामग्रियों तक पहुँच मिली।

इसके बाद लंदन और मुंबई दोनों जगहों से रीलों को रिस्टोर करने के लिए बोलोग्ना में एक विशेष फिल्म रेस्टोरेशन लैब एल इमेजिन रिट्रोवाटा में ले जाया गया। जहां तीन साल के अथक परिश्रम के बाद इसके रेस्टोरेशन का काम पूरा हुआ। इसमें भी बहुत परेशानियां सामने आई। क्योंकि, ओरिजिनल कैमरा निगेटिव की हालत इतनी खराब थी, कि इसका रेस्टोरेशन एक बेहद मुश्किल काम था। सबसे बड़ी चुनौती 35 एमएम वाली प्रिंट को 70 एमएम वाइडस्क्रीन में बदलने की थी। लेकिन, इस काम को भी अत्यधिक परिश्रम के साथ सफलता से पूरा किया गया।

इस कवायद में फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन के निदेशक शिवेंद्र सिंह डूंगरपुर ने बहुत रुचि दिखाते हुए समर्पण भावना से काम किया। उनका कहना है कि इस तथ्य के बावजूद कि वह मूल कैमरा निगेटिव का उपयोग नहीं कर सके और एक भी 70 मिमी प्रिंट भी नहीं बचा था। फिर भी उन्होंने यह सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि इस ऐतिहासिक फिल्म को न केवल खूबसूरती से रिस्टोर किया जाए। इसके लिए उन्होंने इसका ओरिजिनल क्लाइमेक्स और कुछ काटे हुए दृश्यों को यथा स्थान रखकर इसकी रोचकता को पहले से ज्यादा बढ़ा दिया, ताकि नए दर्शकों के साथ साथ उस जमाने के दृश्य भी इसका लुत्फ ले। सिप्पी फिल्म्स इसे सिप्पी फिल्म के संस्थापक जीपी सिप्पी की दूरदृष्टि और विरासत को विनम्र श्रद्धांजलि मानते हैं। खबर भी है कि इतालवी प्रीमियर के बाद 'शोले' को इसकी 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समारोहों और थिएटरों के साथ 15 अगस्त को भारत में भी प्रदर्शित किया जाएगा। यह प्रदर्शन भारतीय दर्शकों के सामने नए अवतार में आएगी।

'शोले' जैसी फिल्म बनाना आसान नहीं था। रमेश सिप्पी ने इस फिल्म की मेकिंग का किस्सा एक इंटरव्यू में बताया था। रमेश सिप्पी के मुताबिक 'शोले' की रायटर जोड़ी सलीम-जावेद एक दिन मेरे पास आए, जब मैं एक फिल्म की शूटिंग में बहुत बिजी था। उन्होंने कहा कि एक कहानी है, जरा सुन लो। मैंने कहा कि बाद में सुनूंगा तो दोनों बोल पड़े, अभी सुनना पड़ेगा। बस दो मिनट का टाइम चाहिए। मेरे हां कहते ही दोनों ने कहानी सुनाना शुरू कर दी। एक ठाकुर है, जो दो कैदियों की मदद से गांव वालों को गब्बर के आतंक से बचाता है। उन्होंने पूरी कहानी वाकई में दो मिनट में सुना दी। रमेश सिप्पी को भी कहानी अच्छी लगी। 'शोले' की कहानी फायनल करने के लिए सलीम-जावेद और रमेश सिप्पी दो महीने से ज्यादा समय तक एक ही कमरे में रहे। न दिन देखा न रात। फिल्म के एक-एक हिस्से और सीन के बारे में विचार-विमर्श शुरू किया गया। तीनों बार-बार कागज फाड़ते और नए सिरे से लिखते। आखिरकार तीनों की मेहनत रंग लाई और 'शोले' की पूरी स्क्रिप्ट पूरी कर ली गई।

सिप्पी ने बताया कि जब हमने अमजद खान को लेकर गब्बर सिंह की शूटिंग शुरू की, तो सबसे बड़ी परेशानी यह आई कि गब्बर की दहशत को कैसे दिखाया जाए, ताकि दर्शक भी सिहर जाएं। संगीतकार आरडी बर्मन साहब ने अमजद खान के अपीयरेंस के लिए एक खास तरह का बैकग्राउंड म्यूजिक भी रचा था। गब्बर की डाकू वाली वर्दी वगैरह सब कुछ का इंतजाम कर लिया गया। मगर जब वह पहली बार परदे पर आता है, तो पहाड़ी पर चलते हुए उसके साथ एक बेल्ट से भी चट्टान से टकराते हुए एक खौफनाक आवाज निकलती है। इसके लिए हमें बहुत ही परेशानी उठानी पड़ी। गब्बर के लिए खास बेल्ट की मिशन की तरह तलाश शुरू हुई। पूरे मुंबई के जितने भी भंगार बेचने वाले इलाके, कबाड़ी मार्केट थे, वहां पर जा-जाकर पुरानी बेल्ट की तलाश करनी शुरू कर दी। खोज करीब एक हफ्ते तक चली। ऐसे में हमने पूरे मुंबई से करीब 200 बेल्ट जुटाए। इसे लेकर शूटिंग वाली जगह पर लेकर आए।

जब बेल्ट को हमने अमजद खान को दिया और उनसे चट्टान पर चलते हुए बेल्ट को घसीटने के अंदाज में चलने को कहते। आरडी बर्मन खुद उस आवाज को सुनते। मगर, हर बार हमें निराशा होती, क्योंकि गब्बर की जिस तरह की दहशत थी, वो बेल्ट से नहीं आ पा रही थी। आखिरकार करीब 150 बेल्ट से प्रयोग करने के बाद हमें कामयाबी मिल ही गई। जब अमजद खान उस बेल्ट को लेकर चलते तो उससे खास किस्म की खौफनाक आवाज आती। बस हमने तय कर लिया कि यही परफेक्ट है। हालांकि, अमजद खान भी बार-बार के इस प्रयोग से झुंझला गए थे, मगर उन्होंने बेहद कामयाबी के साथ वह सीन शूट कर लिया, जिसका डायलॉग था 'कितने आदमी थे!'

फिल्म 'शोले' के आखिरी सीन में असल में रमेश सिप्पी ने दिखाया था कि ठाकुर कील लगे जूतों से गब्बर को रौंदता है। मगर आपातकाल इमरजेंसी का दौर होने की वजह से सेंसर बोर्ड ने इस मामले में काफी सख्त रुख अपनाया। सरकार नहीं चाहती थी कि फिल्म से ऐसा संदेश न जाए कि कोई भी कानून अपने हाथ में ले सकता है। हालांकि, रमेश सिप्पी अड़े रहे, मगर फिल्म निर्माता रहे उनके पिता जीपी सिप्पी ने इसे लेकर उन्हें समझाया, तब जाकर वह माने। फिल्म का क्लाइमेक्स दोबारा शूट हुआ, जिसमें गब्बर को ठाकुर के पैरों से कुचलने से पहले पुलिस पहुंच जाती है और गब्बर को ले जाती है। जब फिल्म का क्लाइमेक्स बदला गया, तब जाकर बात बनी।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

धीरज कुमार चले गए दुनिया के उस पार

अशोक जोशी

अपने ज़माने के चर्चित अभिनेता धीरज कुमार का पिछले दिनों निधन हो गया। उन्हें कुछ समय पहले मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में भर्ती कराया गया था,

जहां वे निमोनिया के कारण गंभीर रूप से बीमार हो गए थे। इसी के चलते उनका निधन हो गया। उनकी पत्नी जुबी कोचर एयर होस्टेस रह चुकी है और उनके चाचा इंदर कोचर के टेलीविजन और विज्ञापन फिल्मों के चर्चित निर्माता है।

फिल्मी दुनिया में ऐसे कई सितारे हुए हैं जिन्होंने अपनी पहली ही फिल्म से धमाकेदार एंट्री करने के बाद उसकी सफलता के नशे में बदलते हालात के साथ समझौता न करते हुए समय की धारा से अलग तैरने का प्रयास किया । उनके इस रवैये के कारण कई अच्छे कलाकार फिल्मी दुनिया से बाहर हो गए। लेकिन धीरज कुमार ऐसे कलाकार थे। जिन्होंने 'रातों का राजा' से धमाकेदार एंट्री मारकर शत्रुघ्न सिन्हा जैसे दिग्गज को दोयम दर्जे का अभिनेता होने का अहसास कराया। लेकिन, बाद में उन्होंने समय की बदलती धारा के साथ बहते हुए निगेटिव रोल से लेकर सहायक कलाकार की भूमिका स्वीकार कर न केवल अपना अस्तित्व बचाए रखा, बल्कि उसी दौरान उभरते टीवी माध्यम में कदमताल करते हुए अपने लिए एक सफल और सुरक्षित स्थान भी बनाया। हाल ही में 80 वर्ष की उम्र में निमोनिया से जूझते हुए उनका निधन हो गया।

उनका असली नाम धीरज कोचर था और पंजाब के रहने वाले थे। 1 अक्टूबर 1944 को उनका जन्म हुआ था। अभिनय में कैरियर बनाने के लिए उन्होंने एफ़टीआईआई की राह चुनी। जिस समय धीरज कुमार एफटीआईआई में अभिनय सीख रहे थे, जाने माने निर्माता निर्देशक सुभाष घई भी अभिनय के गुरू सीख रहे थे। इस लिहाज से उन दोनो में एक समानता है कि अभिनय में ज्यादा सफल न होने के बाद उन्होंने निर्माण क्षेत्र में जबरदस्त सफलता पायी। यह बात अलग है कि सुभाष घई ने सिनेमा में ही सफलता के कीर्तिमान बनाए जबकि धीरज कुमार को यह सफलता टीवी के माध्यम से मिली थी।

यह भी दिलचस्प है कि धीरज कुमार जी ने भी उसी फ़िल्मफ़ेयर यूनाइटेड प्रोड्यूसर टैलेंट हंट कॉन्टेस्ट में हिस्सा लिया था, जिसमें राजेश खन्ना भी प्रतिभागी थे। उस कांटेस्ट में राजेश खन्ना बाजी मार गए थे। इसी कॉन्टेस्ट में सुभाष घई साहब ने भी हिस्सा लिया और फ़रीदा जलाल उस कॉन्टेस्ट की महिला विजेता बनी। धीरज कुमार की पहली फ़िल्म 1970 में आई 'रातों का राजा' थी। इस फ़िल्म में शत्रुघ्न विलेन थे और फिल्म में आरडी बर्मन के संगीत ने काफी धूम मचाई थी। इस फिल्म के बाद धीरज कुमार को पंजाबी फिल्मों से ढेर सारे ऑफर मिले और वह वहां जमकर ही रह जाते। लेकिन, मनोज कुमार ने उन्हें फिर मुंबई लौटने की सलाह दी।

पंजाबी फ़िल्म इंडस्ट्री में जब धीरज कुमार की फिल्में बहुत बढ़िया प्रदर्शन कर रही थी, उस दौरान मनोज कुमार की 'रोटी कपड़ा और मकान' फ़िल्म का निर्माण कर रहे थे। दोनों के बीच मित्रता थी। मनोज कुमार धीरज को भी एक रोल में कास्ट करना चाहते थे। उन्होंने धीरज कुमार को समझाते हुए कहा कि रीज़नल फ़िल्में करने में कोई बुराई नहीं है, बिल्कुल करो। लेकिन, तुम मुंबई के एक्टर हो, उसको मत छोड़ो। बॉलीवुड इंडस्ट्री के टच में भी रहो। मनोज कुमार की नसीहत धीरज ने मानी और ये फिर से हिंदी फ़िल्मों में काम करने लगे।

इसके बाद देव आनंद ने उनके करियर की दिशा ही बदल दी। उन्होंने एक पार्टी में धीरज कुमार को एक बढ़िया जैकेट पहने देखा, तो वह उनके पास आकर जैकेट की तारीफ करने लगे और अगले ही दिन उन्हें 'हीरा पन्ना' में उन्हें निगेटिव रोल ऑफर कर दिया। जब उन्होंने देव आनंद से कहा कि यह नेगेटिव रोल है तो देव आनंद ने समझाया कि फिल्मों में कुछ नेगेटिव या पॉजिटिव रोल नहीं होता। जो कलाकार अपनी भूमिका में फिट हो जाए, वहीं उसके लिए बेहतर होता है। नतीजा यह हुआ कि वे 'हीरा पन्ना' के मुख्य विलेन बन गए। इसके बाद उन्होंने उधार का सिन्दूर, सरगम, रोटी कपड़ा और मकान, हीरा पन्ना, स्वामी, क्रांति, मांग भरो सजना, पुराना मंदिर, कर्मयुद्ध और 'बहुरूपिया' सहित कई हिट फिल्मों में काम किया। हिंदी फिल्मों के अलावा उन्हें पंजाबी फिल्मों में खासी सफलता मिली। उन्होंने 20 से ज्यादा पंजाबी फिल्मों में काम कर अपने अभिनय का लोहा मनवाया था।

एक्टिंग के साथ-साथ उन्होंने पर्दे के पीछे भी अपनी अलग पहचान बनाई। उन्होंने 'क्रिएटिव आई' नामक प्रोडक्शन हाउस की स्थापना की और इसके चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में कई यादगार प्रोजेक्ट्स को अंजाम दिया। ओम नमः शिवाय, श्री गणेश, मन में है विश्वास ,ये प्यार न होगा कम, कहां गए वो लोग, अदालत, सिंहासन बत्तीसी, मायका जा, तुझ संग प्रीत लगाई, सजना, नादानियां और इश्क, सुभान अल्लाह जैसे लोकप्रिय धारावाहिकों का निर्माण किया। उन्होंने ओम नमः शिवाय, अदालत, मिली और 'घर की लक्ष्मी बेटियां' जैसे कई मशहूर टीवी सीरियल्स का निर्माण किया।

बरखा रानी... जरा, जम के (मत) बरसो!

धर्म कर्म

प्रकाश पुरोहित

बारिश के लिए उनकी परेशानी देखी नहीं जाती। हर रोज दुआ में हाथ उठते हैं कि हे इंद्र देवता आज तो बारिश मत होने देना। सावन के पहले से गुप्त प्रार्थना, पूजा-पाठ शुरू हो जाते हैं कि बारिश की बूंद भी नहीं गिरे। जानते हैं कि बरसात नहीं होने से खेती-किसानी का बहुत नुकसान हो जाता है, लेकिन दुनिया को देखें कि अपना घर ! बारिश होने से जैसे किसान का चेहरा खिल जाता है, वैसे ही उनका मुरझा जाता है। किसान का साल भर का कर्ज उतरने को होता है और घर में रौनक आ जाती है, लेकिन उनके यहां तो जैसे सूखा ही पड़ जाता है।

कुछ बरस से बरसात बढ़िया साथ दे रही है। जब भी उन्होंने चाहा, बारिश के बादल कहीं और जाकर बरस गए, लेकिन उनके इलाके में बूंद भी नहीं टपकी। ऐसा नहीं है कि उन्हें बारिश से कोई कष्ट है या बारिश उन्हें अच्छी नहीं लगती है। बारिश

का पहले तरसा-तरसा कर होना और बाद में झमाझम बरसना ही तो उनकी सफलता की कुंजी है। यही बिजनेस है और यही काम-धंधा है, जो उनको आता है और पोसाता भी है। बारिश के ये चार माह ही उन्हें इतना कुछ दे जाते हैं कि बाकी साल उनका खर्च मजे से चल जाता है!

लग रहा होगा कि यह कोई पहेली या पाइथागोरस की कोई प्रमेय, सीधी-सी बात है कि हर साल, पहले बारिश नहीं होने के लिए अकेले में पूजा पाठ, व्रत-उपवास और छुप कर यज्ञ भी कर लेते हैं। जब बारिश सही में रुलाने लगती है और चारों तरफ त्राहिमाम होने लगती है, जैसी कि अभी जुलाई में हो रही है हमारे आसपास, ये निकल आते हैं सार्वजनिक कर्मकांड के साथ ! किसान तो बीज बोने के बाद बरसात का इंतजार करता है और अच्छी बारिश से फसल की उम्मीद करता है, लेकिन इनका तो बेहतर समय ही तब शुरू होता है, जब अकाल के आसार नजर आने लगते हैं। सूखे में उन्हें हरियाली दिखाई देने लगती है। बादल देख कर मन मयूर नाचता होगा, किसी नचैये का, इनका तो दिल बैठने क्या, लेटने लगता है!

खुद इंद्र भी कई बार हैरान हो जाते हैं कि बारिश की अगली किस्त जारी करना है या 'रेन रेन गो अवे' का जाप करना है। समझ नहीं पाते हैं कि इस शख्स के दिल से जो निकल रहा है, उसे पूरा करें या भक्त अंदर ही अंदर जो डिमांड कर रहा है, उसे पूरी करें। एक ही व्यक्ति का ऐसा डबल रोल या तो राजनीति में संभव है या फिर यहां। फिल्म वाले 'राम और श्याम' हो या 'सीता और गीता', हाथ ही जोड़ लें कि ऐसा दोहरा या दोगला चरित्र तो हम नहीं निभा सकते।

मौसम विभाग भी शर्मिंदा होकर बारिश की भविष्यवाणी बंद करने लगता है, तब इनका काम शुरू होता है। जब लोग उम्मीद छोड़ने लगते हैं, तब ये आते हैं बारिश के लिए यज्ञ, हवन और तमाम धतकरम लेकर। सभी को पता रहता है कि अब ये भिड़ जाएंगे और जब तक बारिश, भरपूर बारिश ना हो जाए, सकने नहीं बैठने वाले हैं। कभी इंद्र को पानी में डुबाते हैं तो कभी धूप में तपने के लिए रखते हैं... तब अंतिम हथियार के रूप में आमरण उपवास का सालाना जलसा भी होता है। जब कोई इतना बलिदान कर रहा होता है तो आमजन का भी सहयोग मिलने लगता है। इलाके, प्रदेश और देश के नेता भी इस मौके को चुनाव की तैयारी की तरह लेते हैं और हाजिरी लगाते हैं। इनकी पूजा बैठक में ना जाने कितने नए-पुराने चेहरे लटके हुए हैं।

इनकी पूजा किस तरह होती होगी, इसका अंदाज लगाना बहुत ही मुश्किल है, क्योंकि ये ही जानते हैं कि जितने ज्यादा रोज यह कर्मकांड चलेगा, उतना चढ़ावा ज्यादा आएगा... इनकी दुविधा आमजन नहीं समझ सकता कि दिखावे के लिए 'पानी बाबा आ जा...' का जाप करते हैं और मन ही मन और 'कुछ रोज और ठहर, ना बरस' का आर्तनाद करते हैं।

बारिश आज भी नहीं हुई, इस पर ऐसा मुंह बनाते हैं जैसे पिताजी का निधन हो गया हो, लेकिन अंदर ही अंदर ऐसे पुलकित रहते हैं जैसे मन्नतों के बाद बच्चा हुआ हो, सोहर गाने का मन होने लगता है। यह सही है कि दिखावे के पूजन में भी कुछ चीजों का निषेध रहता है जैसे नॉनवेज, यानी अंडा भी नहीं देखते और रोज के रस-रंजन से भी हाथ जोड़ लेते हैं कि बारिश होगी तभी गला तर करेंगे। यह उनके इस कर्मकांड का बीसवां साल है। वैसे खुद सोचते हैं कि क्या मेरे कुछ करने से बारिश के होने ना होने का रिश्ता है, मगर यह सवाल इसलिए ज्यादा देर टिक नहीं पाता है कि जब लोगों को यह यकीन है तो अपन को सवाल खड़ा करने की क्या जरूरत है। आमतौर पर जुलाई ही होता है, जो उनका पूरे साल का बजट तय करता है। जब बारिश अटक जाती है तो इनकी निकल पड़ती है और भरपूर बरसात होती है पैसों की। बारिश जितना खेंच मारती है, इनकी तबीयत गच्च रहती है!

ऐसा नहीं है कि एकाध बारिश से काम खत्म। फिर तो तरह-तरह के उद्यापन और पूर्णाहुति का सिलसिला चलता है, जैसे क्रिकेट में टेस्ट मैच जीतने के बाद जश्न मनता रहता है या उप-चुनाव में सत्ताधारी दल की जीत के बाद विजय जुलूस। यूं कह सकते हैं सूखे के बाद जब बारिश होती है तो इनके यहां फिर पूरे साल खुशियों की बरसात होती रहती है। इसी आस में बारिश का इंतजार रहता है कि पहले रुलाएगी दुनिया को और फिर अपने चारों तरफ हरा ही हरा कर जाएगी... अंधा होने की भी जरूरत नहीं, क्योंकि... इतने तो अक्ल के अंधे हैं!

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

'आप जैसा कोई- डेटिंग एप का नया खेल

साभी हाल ही में ओटीटी पर एक फिल्म 'आप जैसा कोई' देखी। मैं यह नहीं कह रही कि खूब अच्छी फिल्म है। मुझे लगा ये लड़के-लड़की की उम्र में अंतर पर फिल्म है, पर एक एप के कारण कहानी मोड़ लेती है, फिर एक और ट्विस्ट आता है तो जोड़-तोड़ कर एक अच्छा सबक देने वाली फिल्म तैयार होती है। कलाकारों का अभिनय बहुत अच्छा है। पृष्ठभूमि भी बढ़िया है।

चैट रूम से उतना भरोसा हासिल हो नहीं रहा था और यूँ भी युवा, केवल युवा क्यों लिखूँ, उम्र दराज लोगों को भी कुछ और चाहिये था। पहले शादी से संबंधित एप आए। भई बात पक्की हो गई। अब डेटिंग के लिये एप चाहिये। उन्हें भी जो सिंगल है और जब तक शादी लायक 'अच्छी' लड़की नहीं मिल जाती, अजनबी लड़कियों या लड़कों से काम चलाया जाये। कभी-कभी उन अजनबियों में से भी कोई अपना बन जाता है पर तहकीकात ज़रूरी हो जाती है। प्रोफाइल बैकग्राउंड, फॉलोअर्स, फोटो सर्च किये जाते है। और सामने वाले को मूर्ख समझते है। उसका पब्लिक स्टेट्स आपको क्लीन ही मिलेगा, फिर आज 2025 में जिस तरह की लहर बनी, लड़के-लड़की दोनों असुरक्षित महसूस करते हैं। मान लो रिश्ता बांध भी चुके हो। डेटिंग के समय उलजुलूल हरकत कर रिश्ता गंवा सकते हो कि अरे ये तो बहुत फ्री है जाने कितनों के साथ ऐसी हरकतें करती होगी। जबकि लड़की सोचती है अब रिश्ता तो हो गया अब क्या शरमाना। या लड़का प्रताड़ना या मीटू केस में फंस सकता है।

शादीशुदा स्त्री-पुरूष मोनोटोनस जिंदगी से ऊब डेटिंग एप पर चले जाते हैं और फिल्म 'मेट्रो इन दिनों' की तरह पकड़े जाने पर एक दूसरे पर आरोप लगाते है जबकि परिवार के प्रति ईमानदार रहते है और पति पत्नी का रिश्ता शंका में घिरा रह जाता है। डेटिंग में भी आपको ईमानदारी चाहिए तो ये संभव नहीं है। कई बार डेटिंग से अच्छे दोस्त और रिश्ते भी बन जाते है पर संभावना धोखे की ज्यादा रहती है। आपको डेटिंग एप पर जाना है तो सिर्फ एक ऐसी दोस्ती का दावा करें जो किसी रिश्ते की मांग नहीं करता। लड़के-लड़की उम्रदराज़ लोग कोई भी अपना स्ट्रेटस सही नहीं डालता। कई बार बात शादी तक पहुँच जाती है या शादी हो जाती है तो जाति, धर्म, उसके जीवन के नये रंग दिखाई देते है। पर अब क्या हो जब चिड़िया चुग गई खेत। थाना, पुलिस, कानून में उलझ के रह जाती है

जिंदगी। ये बात तो हुई जो पूर्णतः डेटिंग पर डिपेंड रहते है जबकि फिल्म में रिश्ता बाकायदा देखा समझा जाता है, वक्त गुज़ारा जाता है, अंततः सगाई हो जाती है और लड़की जो बात उसे बताना चाहती है, बता नहीं पाती पर बड़ी सुरीली आवाज़ में उसका नाम भिन्न भिन्न तरीके से पुकारती है और लड़का चौंक जाता है। ये आवाज उसने उस डेटिंग एप पर सुनी थी जहां उसके मित्र ने अकेलापन दूर करने के लिये उसे सुझाई थी। पर इत्तेफाक देखिये दोनों बहुत नार्मल बात करते थे।

अब लड़का उसे ब्लेम करता है तुम ऐसी एप पर जाती हो गंदी बातें करती हो लोगो के साथ। लड़की उसे समझाती है जैसे तुम अकेले थे तुम उस एप पर गये वैसे ही मैं भी अकेली थी मैं भी पहली बार इस एप पर गई। दोनों वाकई सच्चे होते है। लड़का रिश्ता तोड़ देता है, अब लड़की भी मायूस होकर कहती है, ''तुम लड़के हो तुम कर सकते हो मैं लड़की हो कर नहीं कर सकती फिर रिश्ते में बराबरी कहां हुई?'' बाद में लड़के की भतीजी उसे ये ही बात समझाती है तो वो फिर लड़की के पास जाकर कहता है, ''मैंने तुम्हें माफ किया अब अगर तुम ऐसा करोगी तो मुझे बताना और मैं तुम्हारी लिमिट तय करूँगा।'' अब लड़की बेहद नाराज़ हो जाती है पर जब लड़के की एक उम्रदराज़ प्रियजन पति को छोड़ इसी बात पर रिश्ता दूसरे से बनाती है कि मैं सिर्फ तुम्हारे आदेश से उठू बैठूं, मेरा कोई अस्तित्व नहीं तो लड़का उनका फेवर करता है और तब उसे अपने कहे पर यकीन होता है कि वो भी तो लड़की के साथ ये ही कर रहा था, तब वो उससे माफी मांगता है।

कुल मिलाकर डेटिंग एप बहुत सावधानी की मांग करता है। भावावेश में अक्सर आप जो अपनी पर्सनल बातें बता देते है वो ब्रेकअप होने पर ब्लेकमेलिंग का सूत्र पकड़ा देती है। स्त्रियाँ कह रही हैं, हमीं दोषी क्यों? जब पुरूष अनजान स्त्रियों से डेटिंग कर सकते है तो स्त्रियाँ क्यों नहीं?'' वैसे मुझे अभी इतने बड़े दिल के पुरूष दिखें नहीं जो डेटिंग करने वाली स्त्री को स्वीकारे। तो या तो सावधानी से डेटिंग करें, ज़्यादा ईमानदारी ना दिखायें, इतनी नॉमिनल सामग्री डाले अगर पकड़े जायें तो किसी का नुकसान ना हो पर जहां तक मेरी सोच है पजेसिवनेस के कारण अभी एक पीढ़ी और लगेगी जो शायद स्त्री पुरूष को बराबर माने क्योंकि पहले विवाहेत्तर संबंध में पुरूष ही इन्वाल्व होते थे, अब स्त्रियाँ भी बहुत हो रही है। ये कोई बहादुरी की बात नहीं है। रिश्ते थोपे ना जाएं। ना चले तो डेटिंग एप पर दूसरा साथी रख पति पत्नी को धोखा ना दे। रिश्ता नहीं निभता तो अलग हो जाएं। फिर जितनी चाहें डेटिंग करें पर किसी को रंगीन सपने ना दिखाएं। इसलिये अपने पार्टनर से पूछते रहें बार बार और क्या कह रही है जिंदगी?

नील गगन

रूई की मानिंद बादलों से आच्छादित नील गगन का खूबसूरत नजारा ! **फोटो- ऋतुराज बुड़ावनवाला**

किचन की किच-किच से परे...!

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

हां अगर खुशी या चाव से पकाए तो तारीफ कीजिए, लेकिन यह कहां का नियम है कि महिला है तो किचन संभाले। अगर बहू का किचन होगा तो भी क्या ये यूं ही उनको खाना पकाते देखेंगे या बहू की बुराई करने के लिए कोने तलाश रहे होंगे। तब क्या यह नहीं होगा कि बहू के यहां भी खाना खुद ही पकाना होता है। अगर लड़की के घर में किचन संभालने को नहीं मिल रहा है तो मां फिर भी काम चला लेगी, लेकिन इन लोगों का क्या करें...

मां हो या कोई और महिला, किचन में खाना पकाती है तो फिर इंडिया हो या यूके, किचन तो उन्हें ही संभालना है, यह कहां का नियम है। जिनके खुद के घर में काम निपटाने के लिए मददगारों की कतार होती है, उस इंसान को किचन में ही क्यों देखना चाहते हैं! क्या किसी मां या महिला का खाना पकाना ही उसके दिन का मकसद होना चाहिए!

हां अगर खुशी या चाव से पकाए तो तारीफ कीजिए, लेकिन यह कहां का नियम है कि महिला है तो किचन संभाले। अगर बहू का किचन होगा तो भी क्या ये यूं ही उनको खाना पकाते देखेंगे या बहू की बुराई करने के लिए कोने तलाश रहे होंगे। तब क्या यह नहीं होगा कि बहू के यहां भी खाना खुद ही पकाना होता है। अगर लड़की के घर में किचन संभालने को नहीं मिल रहा है तो मां फिर भी काम चला लेगी, लेकिन इन लोगों का क्या करें... उन्हें तो तीस साल पुरानी डिनर पार्टी याद है, जब पच्चीस-तीस लोगों का खाना बनाकर, चूल्हे पर मक्के की रोटी बना कर खिलाती थी। यही हैं, जिन्हें खुद की उम्र का तो एहसास होता है और उसको जताना नहीं भूलते, लेकिन घर की महिलाओं और मां की उम्र की अनदेखी लापरवाही से जानते हैं।

रही बात इन महिलाओं और ऐसी मां की, जिन्हें पूरी जिंदगी यह समझ नहीं आया कि खाने की तारीफ सुनते-सुनते और खाना बनाते-बनाते खुद भी भूल गईं कि खुशी और उम्मीदों को पूरा करने के लिए किचन में जाती हैं। जिन महिलाओं ने 'मर्दों को पहले खाना खाने का हक क्यों है' पर सवाल नहीं किया, यह उन्हीं की चुप्पी और बर्दाश्त का नतीजा है कि आज भी खाना खाते-खाते गरम रोटी की पुकार लगती है और पसीने में तरबतर महिला 'बस अभी लाई' कह कर तेजी से रोटी बेलने लगती है।

कहने का मतलब यह नहीं है कि मां और महिलाओं को किचन से हड़ताल कर देना चाहिए, बात यह है कि जो खुशी और सेहत के हिसाब से किचन संभाल सके तो संभाल लीजिए, लेकिन अगर तकलीफ में हैं तो सेहत को नजरंदाज कर किचन की तरफ न देखें, क्योंकि यह सुकून है, जहां मेहनत चखी जाती है और इस कला में पारंगत लोग जल्दबाजी और तनाव के साथ खाना पकाने की सलाह नहीं देते।